# चाणक्यनीतिदर्पण

भाषाटीकासहित

जिसमें

नीतिके अत्युत्तम दृष्टान्तयुक्त सामयिक
श्लोकवर्णितहैं

जिसको

प्रथमबाबूअविनाशीलालकी आज्ञानुसार पण्डित
हरिशङ्कर ने काशीआर्य्ययन्त्रालयमें
शोधकरमुद्रितकरायाथा

वही

नीतिदर्शियोंके उपकारार्थ

प्रथम बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेयंत्रालयमेंमुद्रितहुआ

अक्टूबर सन् १८८३ई०

# विज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् सेप्टेम्बर सन् १८८८ ई० पर्य्यन्तजो पुस्तकेंवेंचनेके लियेतैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखीहैं और उनकामोलभी बहुतकिफ़ायतसे घटाके नियतहुआहै परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपारकी इच्छाहो वह छापेखानेकेमुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमतका निर्णयकरलें ॥

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|
| भाषा इतिहास | हरिवंशपर्व | रामायण कवितावली |
| | म०भा०पर्वअलिहदाभी हैं | रामायणगीतावलीसटीक |
| महाभारत | रामायण रामविलास | विनयपत्रिका बा० मे० |
| १ पहिले हिस्सामें | रामायण तुलसीकृत | विनयपत्रिका बा०शि० |
| आदिपर्व, सभापर्व | रामायण सटीक मये | लिङ्गपुराण |
| वनपर्व | मानसदीपिकाकोषआदि | विष्णु पुराण |
| २ दूसरे हिस्सामें | तथाजिल्दबंधी | गरुडपुराण प्रेतकल्प |
| विराटपर्व, उद्योगपर्व | तथासीटेकवरोंकी | ब्रह्मोत्तरखण्ड |
| भीष्मपर्व, द्रोणपर्व | मयेतसवीर व क्षेपक | मिश्रितमाहात्म्य |
| ३ तीसरे हिस्सामें | रामायण तुलसीकृत | वैद्यकभाषा |
| कर्णपर्व, शल्यपर्व | सातोकांड | निघंटु |
| गदापर्व, सौप्तिकपर्व | | अमरबिनोद |
| ऐषिकपर्व, विशोकपर्व | १ बालकांड | वैद्यजीवन |
| स्त्रीपर्व, शान्तिपर्वमें | २ अयोध्याकांड | औषधिसंग्रहकल्पवल्ली |
| राजधर्म, आपदधर्म | ३ आरण्यकांड | अमृतसागर बड़ा |
| मोक्षधर्म | ४ किष्किन्धाकांड | तथा छोटा |
| ४ चौथे हिस्सामें | ५ सुन्दरकांड | वैद्यमनोत्सव |
| शान्तिपर्व, दानधर्म | ६ लंकाकांड | नाटक |
| अश्वमेध आश्रमवासिक | ७ उत्तरकांड | प्रबोधचन्द्रोदय |
| एवं मौशलपर्व | रामायण शब्दार्थकोष | रामाभिषेक |
| महाप्रस्थानपर्व | रामायण का इतिहास | आनन्द रघुनन्दन |
| स्वर्गारोहणपर्व | रामायणमानसदीपिका | |

# चाणक्यनीतिदर्पणः ॥

प्रणम्यशिरसाविष्णुंत्रैलोक्याधिपतिंप्रभुम् ॥
नानाशास्त्रोद्धृतंवक्ष्येराजनीतिसमुच्चयम् १

टीका। तीनोंलोकोंके पालनकरनेवाले सर्वशक्तिमान् विष्णु को शिरसे प्रणाम करके अनेक शास्त्रोंमें से निकालकर राजनीति समुच्चय नाम ग्रन्थ को कहूंगा १ ॥

अधीत्येदंयथाशास्त्रंनरोजानातिसत्तमः ॥
धर्मोपदेशविख्यातंकार्याकार्यशुभाशुभम् २

टी०। जो इसको विधिवत् पढ़कर धर्मशास्त्र में प्रसिद्ध शुभ कार्य और अशुभ कार्यको जानता है वह अति उत्तम गिना जाताहै २ ॥

तदहंसंप्रवक्ष्यामिलोकानांहितकाम्यया ॥
येनविज्ञानमात्रेणसर्वज्ञत्वंप्रपद्यते ३

टी०। मैं लोगों के हितकी बांछासे उसको कहूंगा जिसके ज्ञानमात्रसे सर्वज्ञता प्राप्त होजातीहै ३ ॥

मूर्खशिष्योपदेशेनदुष्टस्त्रीभरणेनच ॥
दुःखितैःसंप्रयोगेणपण्डितोप्यवसीदति ४

टी०। निर्बुद्धि शिष्यको पढ़ाने से दुष्ट स्त्रीके पोषण से और दुखियोंके साथ व्यवहार करनेसे पंडितभी दुःख पाताहै ४ ॥

दुष्टाभार्याशठंमित्रंभृत्यश्चोत्तरदायकः ॥

ससर्पेचगृहेवासोमृत्युरेवनसंशयः ५

टी० । दुष्टस्त्री शठमित्र उत्तर देनेवाला दास और सांपवाले घरमें बास ये मृत्यु स्वरूपही हैं इसमें संशयनहीं ५ ॥

आपदर्थेधनंरक्षेद्दारान्रक्षेद्धनैरपि ॥
आत्मानंसततंरक्षेद्दारैरपिधनैरपि ६

टी० । आपत्ति निवारण करनेके लिये धनको बचाना चाहिये धनसेभी स्त्रीकी रक्षाकरनी चाहिये सबकालमें स्त्री और धनोंसे भी अपनी रक्षाकरनी उचित है ६ ॥

आपदर्थेधनंरक्षेच्छ्रीमतश्चकिमापदः ॥
कदाचिच्चलितालक्ष्मीःसंचितोऽपिविनश्यति ७

टी० । विपत्ति निवारणके लिये धनकी रक्षाकरनी उचितहै क्या श्रीमानोंकोभी आपत्ति आतीहै हां कदाचित् दैवयोग से लक्ष्मीभी चलीजाती उस समय संचितभी नष्ट होजाताहै ७ ॥

यस्मिन्देशेनसंमानोनवृत्तिर्नचबान्धवः ॥
नचविद्यागमोप्यस्तिवासंतत्रनकारयेत् ८

टी० । जिस देशमें न आदर न जीविका न बन्धु न विद्याका लाभहै वहां बास नहीं करनाचाहिये ८ ॥

धनिकःश्रोत्रियोराजानदीवैद्यस्तुपंचमः ॥
पंचयत्रनविद्यन्ते नतत्रदिवसंवसेत् ९

टी० । धनिक वेदका ज्ञाता ब्राह्मण राजा नदी और पांचवां वैद्य ये पांच जहां विद्यमान न रहैं तहां एकदिन भी बास नहीं करना चाहिये ९ ॥

लोकयात्राभयंलज्जादाक्षिण्यन्त्यागशीलता ॥
पंचयत्रनविद्यन्तेनकुर्य्यात्तत्रसंगतिम् १०

टी० । जीविका भय लज्जा कुशलता देनेकी प्रकृति जहां ये पांच नहीं वहांके लोगोंके साथ संगति करनी न चाहिये १० ॥

जानीयात्प्रेषणेभृत्यान्बान्धवान्व्यसनागमे ॥
मित्रञ्चापत्तिकालेतुभार्यांचविभवक्षये ११

टी० । काममें लगानेपर सेवकोंकी दुःख आनेपर बान्धवोंकी विपत्ति कालमें मित्रकी और विभवके नाशहोनेपर स्त्रीकी परीक्षा होजाती है ११ ॥

आतुरेव्यसनेप्राप्तेदुर्भिक्षेशत्रुसंकटे ॥
राजद्वारेश्मशानेचयस्तिष्ठतिसबान्धवः १२

टी० । आतुर होनेपर दुःख प्राप्तहोने पर काल पड़ने पर वैरियोंसे संकट आनेपर राजाके समीप और श्मशानपर जो साथ रहताहै वही बन्धुहै १२ ॥

योध्रुवाणिपरित्यज्यअध्रुवंपरिसेवते ॥
ध्रुवाणितस्यनश्यन्तिअध्रुवंनष्टमेवहि १३

टी० । जो निश्चित वस्तुओंको छोड़कर अनिश्चितकी सेवा करताहै उसकी निश्चित वस्तुओंका नाश होजाता है अनिश्चित तो नष्टही है १३ ॥

वरयेत्कुलजांप्राज्ञोविरूपामपिकन्यकाम् ॥
रूपशीलांननीचस्यविवाहःसदृशेकुले १४

टी० । बुद्धिमान् उत्तम कुलकी कन्या कुरूपा भी हो उसेवर नीचकुलकी सुन्दरी हो तो भी उसको नहीं इसकारण कि बिवाहतुल्य कुलमें बिहितहै १४ ॥

नदीनांशस्त्रपाणीनांनखीनांशृङ्गिणांतथा ॥
विश्वासोनैवकर्त्तव्यःस्त्रीषुराजकुलेषुच १५

टी० । नदियोंका शस्त्रधारियोंका नखवाले और सींगवाले

जन्तुओं का स्त्रियों में और राजकुलपर विश्वास नहीं करना चाहिये १५ ॥

विषादप्यमृतंग्राह्यममेध्यादपिकांचनम् ॥
नीचादप्युत्तमांविद्यांस्त्रीरत्नंदुष्कुलादपि १६

टी० । विषमेंसेभी अमृतको अशुद्ध पदार्थोंमेंसे सोनेको नीचसे भी उत्तमबिद्याको औरदुष्टकुलसेभीस्त्रीरत्नको लेनायोग्यहै १६॥

स्त्रीणांद्विगुणआहारोलज्जाचापिचतुर्गुणा ॥
साहसंषड्गुणंचैवकामश्चाष्टगुणस्स्मृतः १७

टी० । पुरुष से स्त्रियों का आहार दूना लज्जा चौगुणी साहस छगुना और काम आठगुना अधिक होताहै १७ ॥

इतिप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अनृतंसाहसंमायामूर्खत्वमतिलोभता ॥
अशौचत्वंनिर्दयत्वंस्त्रीणांदोषाःस्वभावजाः १

टी० । असत्य बिना बिचार किसी काममें झटपट लगजाना छल मूर्खता लोभ अपवित्रता और निर्दयता ये स्त्रियोंके स्वाभाविक दोष हैं १ ॥

भोज्यंभोजनशक्तिश्चरतिशक्तिर्वराङ्गना ॥
विभवोदानशक्तिश्चनाल्पस्यतपसःफलम् २

टी० । भोजनके योग्य पदार्थ और भोजनकी शक्ति रतिकी शक्ति सुन्दरस्त्री ऐश्वर्य और दान शक्ति इनका होना थोड़े तपका फल नहीं है २ ॥

यस्यपुत्रोवशीभूतोभार्य्याछन्दानुगामिनी ॥
विभवेयश्चसन्तुष्टस्तस्यस्वर्गइहैवहि ३

टी० । जिसका पुत्र बशमें रहताहै औ स्त्री इच्छाके अनुसार

चलतीहै और जो विभव में संतोष रखता है उसको स्वर्ग यहांही है ३॥

तेपुत्रायेपितुर्भक्ताःसपितायस्तुपोषकः॥
तन्मित्रंयत्रविश्वासःसाभार्य्यायत्रनिर्वृतिः ४

टी०। वेई पुत्रहैं जे पिताके भक्तहैं वही पिताहै जो पालन करताहै वही मित्रहै जिसपर विश्वासहै वही स्त्रीहै जिससे सुख प्राप्त होता है ४॥

परोक्षेकार्य्यहन्तारंप्रत्यक्षेप्रियवादिनम्॥
वर्जयेत्तादृशंमित्रंविषकुम्भम्पयोमुखम् ५

टी०। आंखके ओट होनेपर काम बिगाड़े सन्मुख होनेपर मीठी २ बात बनाकर कहे ऐसे मित्रको मुहड़ेपर दूधसे और सब बिषसे भरे घड़ेके समान छोड़देना चाहिये ५॥

नविश्वसेत्कुमित्रेचमित्रेचापिनविश्वसेत्॥
कदाचित्कुपितंमित्रंसर्वंगुह्यम्प्रकाशयेत् ६

टी०। कुमित्रपर विश्वास तो किसी प्रकारसे नहीं करना चाहिये और सुमित्र पर भी विश्वास न रक्खे इसकाकारण कि कदाचित् मित्र रुष्टहोता सब गुप्त बातोंको प्रसिद्ध करदे ६॥

मनसाचिन्तितंकार्यंवाचानैवप्रकाशयेत्॥
मन्त्रेणरक्षयेद्गूढंकार्यंचापिनियोजयेत् ७

टी०। मनसे सोचेहुये कामका प्रकाश बचनसे न करे किंतु मंत्रणासेउसकीरक्षाकरे औरगुप्तही उसकार्यको काममेंभीलावे७॥

कष्टञ्चखलुमूर्खत्वंकष्टञ्चखलुयौवनम्॥
कष्टात्कष्टतरंचैवपरगेहनिवासनम् ८

टी०। मूर्खता दुःख देतीही है और युवापनभी दुःख देताहै परंतु दूसरेके गृहमेंका बास तो बहुतही दुःखदायकहोताहै८॥

शैलेशैलेनमाणिक्यंमौक्तिकंनगजेगजे ॥
साधवोनहिसर्वत्रचन्दनंनवनेवने ९

टी०। सब पर्वतों पर माणिक्य नही होता और मोती सब हाथियो में नही मिलती साधुलोग सब स्थानमें नही मिलते सब बनमें चंदन नही होता ९ ॥

पुत्राश्चविविधैशीलैर्नियोज्याःसततंवुधैः ॥
नीतिज्ञाःशीलसम्पन्नाभवन्तिकुलपूजिताः १०

टी०। बुद्धिमान् लोग लड़कोंको नानाभांतिकी सुशीलता में लगावें इसकारण कि नीतिके जाननेवाले यदि शीलवान हों तो कुलमें पूजित होते हैं १० ॥

मातारिपुःपिताशत्रुर्वालोयेननपाठ्यते ॥
सभामध्येनशोभन्तेहंसमध्येवकोयथा ११

टी०। वहमाता शत्रु और पितावैरी है जिसने अपने बालकोंको न पढ़ाया इसकारण कि सभाके बीच वे नहीं शोभते जैसे हंसोंके बीच बकुला ११ ॥

लालनाद्बहवोदोषास्ताडनाद्बहवोगुणाः ॥
तस्मात्पुत्रञ्चशिष्यञ्चताडयेन्नतुलालयेत् १२

टी०। दुलारने से बहुत दोष होतेहैं और दण्ड देनेसे बहुत गुण इस हेतु पुत्र और शिष्यको दण्डदेना उचित है १२ ॥

श्लोकेनवातदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धाक्षरेणवा ॥
अवन्ध्यन्दिवसंकुर्य्याद्दानाध्ययनकर्मभिः १३

टी०। श्लोक वा श्लोक के आधेको अथवा आधेमेंसे आधे को प्रतिदिन पढ़ना उचितहै इसकारण कि दान अध्ययन आदि कर्म से दिनको सार्थक करना चाहिये १३ ॥

कान्तावियोगःस्वजनापमानोरणस्यशेषःकुनृपस्यसेवा ॥

दरिद्रभावोविषमासभाचविनाग्निमेतेप्रदहंतिकायम् १४

टी०। स्त्रीका विरह अपने जनों से अनादर युद्धकरके बचा शत्रु कुत्सितराजाकी सेवा दरिद्रता और अविवेकियों की सभा ये विना आगही शरीरको जलाते हैं १४॥

नदीतीरेचयेवृक्षाःपरगेहेषुकामिनी॥
मन्त्रहीनाश्चराजानःशीघ्रंनश्यन्त्यसंशयम् १५

टी०। नदीके तीरकेवृक्ष दूसरेके गृहमें जानेवाली स्त्री मन्त्री रहित राजा निश्चय है कि शीघ्रही नष्ट होजातेहैं १५॥

बलम्विद्याचविप्राणांराज्ञांसैन्यम्बलन्तथा॥
बलम्वित्तञ्चवैश्यानांशूद्राणांचपरिचर्यका १६

टी०। ब्राह्मणों का बल विद्या है वैसेही राजाका बल सेना वैश्यों का बल धन और शूद्रों का बल सेवाहै १६॥

निर्द्धनंपुरुषंवेश्याप्रजाभग्नन्नृपन्त्यजेत्॥
खगावीतफलंवृक्षम्भुक्त्वाचाभ्यागतोगृहम् १७

टी०। वेश्या निर्द्धन पुरुषको प्रजा शक्तिहीन राजाको पक्षी फल रहित वृक्षको और अभ्यागत भोजन करके घरको छोड़ देतेहैं १७॥

गृहीत्वादक्षिणांविप्रास्त्यजन्तियजमानकम्॥
प्राप्तविद्यागुरुंशिष्यादग्धारण्यम्मृगास्तथा १८

टी०। ब्राह्मण दक्षिणा लेकर यजमानको त्याग देतेहैं शिष्य विद्या प्राप्त होजानेपर गुरुको वैसेही जरेहुये बनको मृग छोड़देते हैं १८॥

दुराचारीदुराद्दृष्टिर्दुरावासीचदुर्जनः॥
यन्मैत्रीक्रियतेपुम्भिर्नरःशीघ्रंविनश्यति १९

टी०। जिसका आचरण बुराहै जिसकी दृष्टि पापमें रहतीहै

कुस्थान में बसनेवाला और दुर्जन इन पुरुषों की मैत्री जिसके साथ कीजातीहै वह नर शीघ्रही नष्ट होजाताहै १९ ॥

समानेशोभतेप्रीतीराज्ञिसेवाचशोभते ॥
वाणिज्यंव्यवहारेषुस्त्रीदिव्याशोभतेगृहे २०

टी०। समान जनसें प्रीति शोभती है और सेवा राजाकी शोभतीहै व्यवहारो में बनिआई औरघरमेंदिव्यस्त्रीशोभतीहै२० ॥

इतिद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कस्यदोषःकुलेनास्तिव्याधिनाकेनपीडिताः ॥
व्यसनंकेननप्राप्तङ्कस्यसौख्यन्निरन्तरम् १

टी०। किसके कुलमें दोष नहीं है व्याधिने किसे पीड़ित न किया किसको दुःख न मिला किसको सदा सुखहीरहा १ ॥

आचारःकुलमाख्यातिदेशमाख्यातिभाषणम् ॥
संभ्रमःस्नेहमाख्यातिवपुराख्यातिभोजनम् २

टी०। आचारकुल को बतलाता है बोली देश को जनाताहै आदर प्रीति का प्रकाश करता है शरीर भोजन को जताताहै २॥

सुकुलेयोजयेत्कन्यांपुत्रंविद्यासुयोजयेत् ॥
व्यसनेयोजयेच्छत्रुम्मित्रन्धर्मेणयोजयेत् ३

टी०। कन्याको श्रेष्ठ कुलवाले को देना चाहिये पुत्र को विद्या में लगाना चाहिये शत्रु को दुःख पहुंचाना उचित है और मित्र को धर्म का उपदेश करना चाहिये ३ ॥

दुर्जनस्यचसर्पस्यवरंसर्पोनदुर्जनः ॥
सर्पोदंशतिकालेतुदुर्जनस्तुपदेपदे ४

टी०। दुर्जन और सर्प इनमें सांप अच्छा दुर्जन नहीं इस कारण कि सांप कालआनेपर काटताहै खल तो पद पद में ४ ॥

एतदर्थंकुलीनानांनृपाःकुर्वन्तिसंग्रहम् ॥
आदिमध्यावसानेषुनत्यजन्तिचतेनृपम् ५

टी० । राजा लोग कुलीनों का संग्रह इस निमित्त करतेहैं कि वे आदि अर्थात् उन्नति मध्य अर्थात् साधारण और अन्त अर्थात् विपत्तिमें राजा को नहीं छोड़ते ५ ॥

प्रलयेभिन्नमर्यादाभवन्तिकिलसागराः ॥
सागराभेदमिच्छन्तिप्रलयेऽपिनसाधवः ६

टी० । समुद्र प्रलय के समय में अपनी मर्यादा को छोड़देते हैं और सागर भेद की इच्छा भी रखते हैं परन्तु साधुलोगप्रलय होने पर भी अपनी मर्यादा को नहीं छोड़ते ६ ॥

मूर्खस्तुपरिहर्त्तव्यः प्रत्यक्षोद्विपदःपशुः ॥
भिद्यतेवाक्यशल्येन अदृशङ्कण्टकंयथा ७

टी० । मूर्ख को दूर करना उचित है इस कारण कि देखनेमें वह मनुष्य है परन्तु यथार्थ पशुहै और वाक्यरूप कांटेको वेधता है जैसे अन्धे को कांटा ७ ॥

रूपयौवनसम्पन्नाविशालकुलसम्भवाः ॥
विद्याहीनानशोभन्तेनिर्गंधाइवकिंशुकाः ८

टी० । सुन्दरता तरुणता और बड़े कुलमें जन्म इनके रहते भी विद्या हीन विना गन्ध पलाश के फूल के समान नहीं शोभते ८ ॥

कोकिलानांस्वरोरूपंस्त्रीणांरूपंपतिव्रतम् ॥
विद्यारूपंकुरूपाणांक्षमारूपंतपस्विनाम् ९

टी० । कोकिलों की शोभा स्वर है स्त्रियों की शोभा पातिव्रत्य कुरूपों की शोभा विद्या है तपस्वियों की शोभा क्षमा है ९ ॥

त्यजेदेकंकुलस्यार्थेग्रामस्यार्थेकुलंत्यजेत् ॥
ग्रामंजनपदस्यार्थेआत्मार्थेपृथिवींत्यजेत् १०

टी०। कुलके निमित्त एकको छोड़ देना चाहिये ग्रामके हेतु कुलका त्याग करना उचितहै देशके अर्थ ग्रामका और अपने अर्थ पृथिवी का अर्थात् सबका त्यागही उचित है १० ॥

उद्योगेनास्तिदारिद्र्यं जपतोनास्तिपातकम् ॥
मौनेनकलहोनास्तिनास्तिजागरितेभयम् ११

टी०। उपाय करने पर दरिद्रता नहीं रहती जपनेवालेको पाप नहीं रहता मौनहोनेसे कलह नहीं होता जागनेवालेके निकट भय नहीं आता ११ ॥

अतिरूपेणवैसीताअतिगर्वेणरावणः ॥
अतिदानाद्बलिर्बद्धोह्यतिसर्वत्रवर्जयेत् १२

टी०। अति सुंदरता के कारण सीता हरी गई अति गर्वसे रावण मारा गया बहुत दान देकर बलि को बांधना पड़ा इस हेतु अति को सब स्थलमें छोड़ देना चाहिये १२ ॥

कोहिभारःसमर्थानांकिंदूरंव्यवसायिनाम् ॥
कोविदेशःसुविद्यानांकःप्रियःप्रियवादिनाम् १३

टी०। समर्थ को कौनवस्तु भारीहै काममें तत्पर रहने वाले को क्या दूरहै सुंदर विद्या वालों को कौन बिदेशहै प्रियबादियों से प्रिय कौनहै १३ ॥

एकेनापिसुवृक्षेणपुष्पितेनसुगन्धिना ॥
वासितन्तद्वनंसर्वंसुपुत्रेणकुलंयथा १४

टी०। एक भी अच्छे वृक्ष से जिसमें सुंदर फूल और गंधहै उससे सब बन सुबासित होजाताहै जैसे सुपुत्र से कुल १४ ॥

एकेनशुष्कवृक्षेणदह्यमानेनवह्निना।

दह्यतेतद्वनंसर्वंकुपुत्रेणकुलंयथा १५

टी०। आग से जरते हुये एकही सूखे वृक्ष से वह सब बन जर जाता है जैसे कुपुत्र से कुल १५ ॥

एकेनापिसुपुत्रेणविद्यायुक्तेनसाधुना ॥
आह्लादितंकुलंसर्वंयथाचन्द्रेणशर्वरी १६

टी०। विद्यायुक्त भला एक भी सुपुत्रहो उससे सब कुल आनन्दित होजाता है जैसे चन्द्रमा से रात्रि १६ ॥

किंजातैर्बहुभिःपुत्रैःशोकसन्तापकारकैः ॥
वरमेकःकुलालम्बीयत्रविश्राम्यतेकुलम् १७

टी०। शोक सन्ताप करने वाले उत्पन्न बहुत पुत्रों से क्या कुल को सहारा देने वाला एक ही पुत्र श्रेष्ठहै जिस में कुल विश्राम पाता है १७ ॥

लालयेत्पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणिताडयेत् ॥
प्राप्तेतुषोडशेवर्षेपुत्रेमित्रत्वमाचरेत् १८

टी०। पुत्र को पांच वर्ष तक दुलारे उपरांत दश वर्ष पर्यन्त ताड़न करे सोलहवें वर्ष के प्राप्ति होने पर पुत्र से मित्र समान आचरण करै १८ ॥

उपसर्गेऽन्यचक्रेचदुर्भिक्षेचभयावहे ॥
असाधुजनसंपर्केयःपलायतिसजीवति १९

टी०। उपद्रव उठने पर शत्रु के आक्रमणकरने पर भयानक अकाल पड़ने पर और खल जनके संग होने पर जो भागता है वह जीवता रहता है १९ ॥

धर्मार्थकाममोक्षेषु यस्यकोऽपिन विद्यते ॥
जन्मजन्मनिमर्त्येषुमरणन्तस्यकेवलम् २०

टी० । धर्म अर्थ काम मोक्ष इन में से जिसको कोई न भया उस को मनुष्यों में जन्म होने का फल केवल मरण यही हुआ २० ॥

मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसञ्चितम् ॥
दाम्पत्ये कलहो नास्ति तत्र श्रीः स्वयमागता २१

टी० । जहां मूर्ख नही पूजे जाते जहां अन्न संचित रहता है और जहां स्त्री पुरुष में कलह नही होता वहां आपही लक्ष्मी विराजमान रहती है २१ ॥

इति तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

आयुः कर्म च वित्तञ्च विद्या निधनमेव च ॥
पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः १

टी० । यह निश्चय है कि आयुर्दाय कर्म धन बिद्या और मरण ये पांचों जब जीव गर्भही में रहता है लिख दिये जाते हैं १ ॥

साधुभ्यस्ते निवर्त्तन्ते पुत्रमित्राणि बान्धवाः ॥
ये च तैः सह गन्तारस्तद्धर्मात्सुकृतं कुलम् २

टी० । पुत्र मित्र बंधु ये साधुजनों से निवृत्त होजाते हैं और जो उनका संग करते हैं उनके पुण्यसे उनका कुल सुकृती होजाता है २ ॥

दर्शनध्यानसंस्पर्शैर्मत्सी कूर्मी च पक्षिणी ॥
शिशुं पालयते नित्यं तथा सज्जनसङ्गतिः ३

टी० । मछली कछुई और पक्षी ये दर्शन ध्यान और स्पर्श से जैसे बच्चों को सर्वदा पालती हैं वैसेही सज्जनों की सङ्गति ३ ॥

यावत्स्वस्थो ह्ययं देहो यावन्मृत्युश्च दूरतः ॥
तावदात्महितं कुर्यात्प्राणान्ते किं करिष्यति ४

टी० । जबलों देह निरोग है और जबलग मृत्यु दूर है तप

र्यन्त अपनाहित पुण्यादिकरना उचित है प्राण के अन्त होजाने पर कोई क्या करेगा ४॥

कालधेनुगुणाविद्याह्यकालेफलदायिनी॥
प्रवासेमातृसदृशीविद्यागुप्तन्धनंस्मृतम् ५

टी०। विद्या में कामधेनु के समानगुण हैं इस कारण कि अ-कालमें भी फल देती है विदेश में माता के समानहै विद्या को गुप्तधन कहते हैं ५॥

एकोऽपिगुणवान्पुत्रोनिर्गुणैश्चशतैर्वरः॥
एकश्चन्द्रस्तमोहंतिनचताराःसहस्रशः ६

टी०। एक भी गुणी पुत्र श्रेष्ठ है सो सैकड़ों गुण रहितोंसे क्या एकही चन्द्र अन्धकारको नष्ट करदेताहै सहस्र तारेनहीं ६॥

मूर्खश्चिरायुर्जातोऽपितस्माज्जातमृतोवरः॥
मृतःसचाल्पदुःखाययावज्जीवंजडोदहेत् ७

टी०। मूर्ख जातक चिरजीवी भी हो उससे उत्पन्न होतेही जो मरगया वह श्रेष्ठ है इस कारण कि मरा थोड़ेही दुःखका कारण होता है जड़ जबलों जीता है डाहता रहता है ७॥

कुग्रामवासःकुलहीनसेवाकुभोजनंक्रोधमुखीचभार्या॥
पुत्रश्चमूर्खोविधवाचकन्याविनाग्निनाषट्प्रदहंतिकायं८

टी०। कुग्राम में वास नीच कुलकी सेवा कुभोजन कलही स्त्री मूर्ख पुत्र विधवा कन्या ये छः बिना आगही शरीर को ज-लाते हैं ८॥

किंतयाक्रियतेधेन्वायानदोग्ध्रीनगुर्विणी॥
कोऽर्थःपुत्रेणजातेनयोनविद्वान्नभक्तिमान् ९

टी०। उस गायसे क्यालाभहै जो न दूध देवे न गाभिन होवे और ऐसे पुत्र हुयेसे क्यालाभजो न विद्वान्भया न भक्तिमान् ९॥

संसारतापदग्धानांत्रयोविश्रांतिहेतवः ॥
अपत्यंचकलत्रंचसतांसंगतिरेवच १०

टी० । संसार के तापसे जलते हुये पुरुषों के बिश्राम के हेतु तीन हैं लड़का स्त्री और सज्जनों की सङ्गति १० ॥

सकृज्जल्पन्तिराजानःसकृज्जल्पन्तिपण्डिताः ॥
सकृत्कन्याःप्रदीयन्तेत्रीण्येतानिसकृत्सकृत् ११

टी० । राजालोग एकही बार आज्ञा देते हैं पण्डितलोग एकही बार बोलतेहैं कन्याकादान एकही बार होताहै ये तीनों बात एक बारही होती हैं ११ ॥

एकाकिनातपोद्वाभ्यांपठनंगायनंत्रिभिः ॥
चतुर्भिर्गमनंक्षेत्रंपंचभिर्बहुभीरणम् १२

टी० । अकेले में तप दो से पढ़ना तीन से गाना चारसे पन्थ में चलना पांच से खेती और बहुतों से युद्ध भलीभांति से बनते हैं १२ ॥

साभार्यायाशुचिर्दक्षासाभार्यायापतिव्रता ॥
साभार्यायापतिप्रीतासाभार्यासत्यवादिनी १३

टी० । वही भार्या है जो पवित्र और चतुर वही भार्या है जो पति व्रता है वही भार्या है जिस पर पति की प्रीति है वही भार्या है जो सत्य बोलती है अर्थात् दान मान पोषण पालन के योग्य है १३ ॥

अपुत्रस्यगृहंशून्यंदिशःशून्यास्त्वबांधवाः ॥
मूर्खस्यहृदयंशून्यंसर्वशून्यादरिद्रता १४

टी० । निपुत्री का घर सूना है बन्धु रहित दिशा शून्य है मूर्ख का हृदय शून्य है और सर्ब शून्य दरिद्रता है १४ ॥

अनभ्यासेविषंशास्त्रमजीर्णेभोजनम्विषम् ॥

दरिद्रस्यविषङ्गोष्ठीवृद्धस्यतरुणीविषम् १५

टी०। बिना अभ्यास से शास्त्र विष हो जाता है बिना पचे भोजन विष होजाता है दरिद्र को गोष्ठी विष और वृद्ध को युवती विष जान पड़ती है १५॥

त्यजेद्धर्मन्दयाहीनम्विद्याहीनंगुरुन्त्यजेत्॥
त्यजेत्क्रोधमुखीम्भार्यान्निस्नेहान्बान्धवान्त्यजेत्१६

टी०। दया रहित धर्म को छोड़ देना चाहिये विद्याविहीन गुरु का त्याग उचित है जिसके मुंहसे क्रोध प्रगट होता हो ऐसी भार्या को अलग करना चाहिये और बिना प्रीति बांधवों का त्याग विहित है १६॥

अध्वाजरामनुष्याणांवाजिनांबन्धनंजरा॥
अमैथुनंजरास्त्रीणांवस्त्राणामातपोजरा १७

टी०। मनुष्यों को पथ बुढ़ापा है घोड़ों को बाँधरखना वृद्धता है स्त्रियों को अमैथुन बुढ़ापा है वस्त्रों को घाम वृद्धता है १७॥

कःकालःकानिमित्राणिकोदेशःकौव्ययागमौ॥
कस्याहंकाचमेशक्तिरितिचिन्त्यंमुहुर्मुहुः१८

टी०। किस काल में क्या करना चाहिये मित्र कौन है यह सोचना चाहिये इसी भांति देश कौन है इस पर ध्यान देना चाहिये लाभ व्यय क्या है यह भी जानना चाहिये इसी भांति किसका मैं हूं यह देखना चाहिये इसी प्रकार से मुझ में क्या शक्ति है यह बराबर बिचारना योग्य है १८॥

अग्निर्देवोद्विजातीनांमुनीनांहृदिदैवतम्॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनांसर्वत्रसमदर्शिनाम् १९

टी०। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनका देवता अग्नि है मुनियों

के हृदय में देवता रहता है अल्प बुद्धियों की मूर्ति और समदर्शियों को सब स्थान में देवता है १९ ॥

इतिचतुर्थोऽध्यायः॥४॥

पतिरेवगुरुःस्त्रीणांसर्वस्याभ्यागतोगुरुः ॥
गुरुरग्निर्द्विजातीनांवर्णानांब्राह्मणोगुरुः १

टी०। स्त्रियों का गुरु पतिही है अभ्यागत सब का गुरु है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य का गुरु अग्नि है और चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है १॥

यथाचतुर्भिःकनकंपरीक्ष्यतेनिघर्षणच्छेदनतापताडनैः ॥
तथाचतुर्भिःपुरुषःपरीक्ष्यतेत्यागेनशीलेनगुणेनकर्मणा २

टी०। घिसना काटना तपाना पीटना इन चारप्रकारों में जैसे सोना की परीक्षा की जातीहै वैसेही दान शील गुणआचार इन चारों प्रकार से पुरुषकी भी परीक्षा कीजातीहै ॥

तावद्भयेषुभेतव्यंयावद्भयमनागतम् ॥
आगतंतुभयंदृष्ट्वाप्रहर्तव्यमशङ्कया ३

टी०। तब तकही भयों से डरना चाहिये जब तक भय नहीं आया और आये हुये भय को देखकर प्रहार करना उचित है ३॥

एकोदरसमुद्भूताएकनक्षत्रजातकाः ॥
नभवन्तिसमाःशीलेयथावदरिकण्टकाः ४

टी०। एकही गर्भ से उत्पन्न और एकही नक्षत्र में जायमान शील में समान नहीं होते जैसे बेर और उसके कांटे ४॥

निस्पृहोनाधिकारीस्यान्नाकामोमण्डनप्रियः ॥
नाविदग्धःप्रियंब्रूयात्स्पष्टवक्तानवञ्चकः ५

टी० । जिसको किसी विषय की वाञ्छा न होगी वह किसी विषय का अधिकार नहीं लेगा जो कामी न होगा वह शरीरकी शोभा करनेवाली वस्तुओं में प्रीति नहीं रक्खेगा जो चतुर न होगा वह प्रिय नहीं बोल सकेगा और स्पष्ट कहनेवाला छली नहीं होगा ५ ॥

मूर्खाणांपण्डिताद्वेष्यअधनानांमहाधनाः ॥
पराङ्गनाःकुलस्त्रीणांसुभगानांचदुर्भगाः ६

टी० । मूर्ख पण्डितों से, दरिद्री धनियों से, व्यभिचारिणी कुल स्त्रियों से, और विधवा सुहागिनियों से बुरा मानतीहैं ६ ॥

आलस्योपहताविद्यापरहस्तगतंधनम् ॥
अल्पबीजंहतंक्षेत्रंहतंसैन्यमनायकम् ७

टी० । आलस्य से विद्या नष्ट हो जाती है दूसरे के हाथ में जाने से धन निरर्थक हो जाता है बीजकी न्यूनता से खेत हत होता है सेनापति के विना सेना मारी जाती है ७ ॥

अभ्यासाद्धार्यतेविद्याकुलंशीलेनधार्यते ॥
गुणेनज्ञायतेत्वार्यःकोपोनेत्रेणगम्यते ८

टी० । अभ्यास से विद्या सुशीलता से कुल गुण से भला मनुष्य और नेत्र से कोप ज्ञात होता है ८ ॥

वित्तेनरक्ष्यतेधर्मोविद्यायोगेनरक्ष्यते ॥
मृदुनारक्ष्यतेभूपःसत्स्त्रियारक्ष्यतेगृहम् ९

टी० । धन से धर्म की रक्षा होती है यम नियम आदि योग से ज्ञान रक्षित रहता है मृदुता से राजा की रक्षा होतीहै भली स्त्री से घर की रक्षा होती है ९ ॥

अन्यथावेदपाण्डित्यंशास्त्रमाचारमन्यथा ॥
अन्यथायद्वदन् शांतंलोकाःक्लिश्यंतिचान्यथा १०

टी०। वेद की पाण्डित्य को व्यर्थ प्रकाश करनेवाला शास्त्र और उसके आचार के विषय में व्यर्थ बिवाद करनेवाला शांत पुरुषको अन्यथा कहनेवाला ये लोग व्यर्थही क्लेश उठातेहैं १०॥

दारिद्र्यनाशनंदानंशीलंदुर्गतिनाशनम् ॥
अज्ञाननाशिनीप्रज्ञाभावनाभयनाशिनी ११

टी०। दान दरिद्रता का नाश करता है सुशीलता दुर्गति को दूर कर देती है बुद्धि अज्ञान का नाश कर देती है भक्ति भय का नाश करती है ११॥

नास्तिकामसमोव्याधिर्नास्तिमोहसमोरिपुः ॥
नास्तिकोपसमावह्निर्नास्तिज्ञानात्परंसुखम् १२

टी०। काम के समान दूसरी व्याधि नहीं है अज्ञानके समान दूसरा बैरी नहीं है क्रोध के तुल्य दूसरी आग नहीं है ज्ञान से परे सुख नहीं है १२॥

जन्ममृत्यूहियात्येकोभुनक्त्येकःशुभाशुभम् ॥
नरकेषुपतत्येकएकोयातिपरांगतिम् १३

टी०। यह निश्चय है कि एकही पुरुष जन्म मरण पाता है सुख दुःख एकही भोगता है एकही नरकों में पड़ता है और एकही मोक्ष पाता है अर्थात् इन कामों में कोई किसीकी सहायता नहीं करसक्ता १३॥

तृणंब्रह्मविदःस्वर्गस्तृणंशूरस्यजीवितम्॥
जिताक्षस्यतृणंनारीनिस्पृहस्यतृणंजगत् १४

टी०। ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है शूर को जीवन तृण है जिसने इन्द्रियों को बश किया उसे स्त्री तृण के तुल्य जान पड़ती है निस्पृह को जगत् तृण है १४॥

विद्यामित्रंप्रवासेषुभार्यामित्रंगृहेषुच॥

व्याधितस्यौषधंमित्रंधर्मोमित्रंमृतस्यच १५

टी०। विदेश में विद्या मित्र होतीहै गृह में भार्या मित्र है रोगी का मित्र औषध है और मरेका मित्र धर्म है १५॥

वृथावृष्टिःसमुद्रेषुवृथातृप्तेषुभोजनम्॥
वृथादानन्धनाढ्येषुवृथादीपोदिवापिच १६

टी०। समुद्रों में वर्षा वृथाहै और भोजनसे तृप्त को भोजन निरर्थकहै धन धनीको देना व्यर्थ है और दिनमें दीप वृथाहै १६॥

नास्तिमेघसमंतोयंनास्तिचात्मसमंबलम्॥
नास्तिचक्षुःसमंतेजोनास्तिधान्यसमंप्रियम् १७

टी०। मेघके जलके समान दूसरा जल नहीं होता अपने बलके समान दूसरेका बल नहीं इसकारण कि समयपर काम आताहै नेत्रके तुल्य दूसरा प्रकाश करनेवाला नहीं है और अन्न के सदृश दूसरा प्रिय पदार्थ नहीं है १७॥

अधनाधनमिच्छंतिवाचंचैवचतुष्पदाः॥
मानवाःस्वर्गमिच्छंतिमोक्षमिच्छंतिदेवताः १८

टी०। धनहीन धन चाहते हैं और पशु वचन मनुष्य स्वर्ग चाहते हैं और देवता मुक्ति की इच्छा रखते हैं १८॥

सत्येनधार्यतेपृथ्वीसत्येनतपतेरविः॥
सत्येनवातिवायुश्चसर्वंसत्येप्रतिष्ठितम् १९

टी०। सत्य से पृथ्वी स्थिर है और सत्यही से सूर्य तपतेहैं सत्यही से वायु बहती है सब सत्यही से स्थिर है १९॥

चलालक्ष्मीश्चलाःप्राणाश्चलेजीवितमंदिरे॥
चलाचलेचसंसारेधर्मएकोहिनिश्चलः २०

टी०। लक्ष्मी नित्य नहीं है प्राण जीवन और घर ये सब

स्थिर नहीं हैं निश्चय है कि इस चर अचर संसार में केवल धर्महीं निश्चल है २० ॥

नराणांनापितोधूर्त्तःपक्षिणांचैववायसः ॥
चतुष्पदांशृगालस्तुस्त्रीणांधूर्ताचमालिनी २१

टी० । पुरुषों में नापित और पक्षियों में कौवा बंचक होताहै पशुओं में सियार बंचक होताहै और स्त्रियों में मालिनिधूर्त्त होतीहै २१ ॥

जनिताचोपनेताचयस्तुविद्यांप्रयच्छति ॥
अन्नदाताभयत्राताप‌ञ्चैतेपितरःस्मृताः २२

टी० । जन्मानेवाला यज्ञोपवीत आदि संस्कार करानेवाला जो विद्या देताहै अन्न देनेवाला भय से बचानेवाला ये पांच पिता गिने जातेहैं २२ ॥

राजपत्नीगुरोःपत्नीमित्रपत्नीतथैवच ॥
पत्नीमातास्वमाताचपंचैतामातरःस्मृताः २३

टी० । राजाकी भार्या गुरुकीस्त्री वैसेही मित्रकी पत्नी सास और अपनी जननी इन पाँचों को माता कहते हैं २३ ॥

इतिपंचमोऽध्यायः ॥५ ॥

श्रुत्वाधर्मंविजानातिश्रुत्वात्यजतिदुर्मतिम् ॥
श्रुत्वाज्ञानमवाप्नोतिश्रुत्वामोक्षमवाप्नुयात् १

टी० । मनुष्य शास्त्र को सुनकर धर्म को जानता है औरसुनकर दुर्बुद्धि को छोड़ता है सुनकर ज्ञानपाता है और सुनकर मोक्ष पाता है १ ॥

पक्षिणांकाकश्चाण्डालःपशूनांचैवकुक्कुटः ॥
मुनीनांपापचाण्डालःसर्वश्चाण्डालनिंदकः २

टी०। पक्षियों में कौवा और पशुवों में कुक्कुट चांडाल होता है मुनियों में चांडाल पापहै सबमें चांडाल निन्दकहै २॥

भस्मनाशुध्यतेकांस्यंताम्रमम्लेनशुध्यति॥
रजसाशुध्यतेनारी नदीवेगेनशुध्यति ३

टी०। काँसे का पात्र राखसे शुद्ध होता है ताँबे का मल खटाई से जाताहै स्त्री रजस्वला होनेपर शुद्ध होजातीहै और नदी धारा के वेग से पवित्र होती है ३॥

भ्रमन्संपूज्यतेराजाभ्रमन्संपूज्यतेद्विजः॥
भ्रमन्संपूज्यतेयोगीस्त्रीभ्रमन्तीविनश्यति ४

टी०। भ्रमण करनेवाला राजा आदर पाता है घूमनेवाला ब्राह्मण पूजा जाता है भ्रमण करनेवाला योगी पूजित होता है परन्तु स्त्री घूमने से भ्रष्ट होजाती है ४॥

यस्यार्थास्तस्यमित्राणियस्यार्थास्तस्यबांधवाः॥
यस्यार्थाःसपुमान्लोकेयस्यार्थाःसचपण्डितः ५

टी०। जिसके धन रहता है उसीका मित्र और जिसके सम्पत्ति उसीकेबांधव होतेहैं जिसके धन रहता है वहीपुरुषगिना जाता है और जिसके धन होताहै वही पण्डित कहाताहै ५॥

तादृशीजायतेबुद्धिर्व्यवसायोपितादृशः॥
सहायास्तादृशाएवयादृशीभवितव्यता ६

टी०। वैसीही बुद्धि और वैसाहीउपाय होताहै और वैसेही सहायक मिलते हैं जैसा होनहार है ६॥

कालःपचतिभूतानिकालःसंहरतेप्रजाः॥
कालःसुप्तेषुजागर्त्तिकालोहिदुरतिक्रमः ७

टी०। काल सब प्राणियों को खाजाता है और कालहीसब

पूजा का नाश करता है सब पदार्थ के लय होजाने पर काल जागता रहता है कालको कोई नहीं टाल सक्ता ७ ॥

नपश्यतिचजन्मान्धःकामान्धोनैवपश्यति ॥
मदोन्मत्तानपश्यन्तिअर्थीदोषन्नपश्यति८

टी० । जन्मका अन्धा नहीं देखता कामसे जोअन्धाहोरहाहै उसको सूझता नहीं मदोन्मत्त किसीको देखता नहीं और अर्थी दोष को नहीं देखता ८ ॥

स्वयंकर्मकरोत्यात्मास्वयन्तत्फलमश्नुते ॥
स्वयंभ्रमतिसंसारेस्वयन्तस्माद्विमुच्यते९

टी० । जीव आपही कर्म करताहै और उसका फल भी आपही भोगताहै आपही संसार में भ्रमता है और आपही उससे मुक्त भी होता है ९ ॥

राजाराष्ट्रकृतम्पापंराज्ञःपापंपुरोहितः ॥
भर्ताचस्त्रीकृतंपापंशिष्यपापंगुरुस्तथा १०

टी० । अपने राज्य में कियेहुये पाप को राजा और राजा के पाप को पुरोहित भोगता है स्त्री कृत पापको स्वामी भोगताहै वैसेही शिष्य के पाप को गुरु १० ॥

ऋणकर्तापिताशत्रुर्माताचव्यभिचारिणी ॥
भार्यारूपवतीशत्रुःपुत्रःशत्रुरपण्डितः ११

टी० । ऋण करनेवाला पिता शत्रु है व्यभिचारिणी माता और सुन्दरी स्त्री शत्रुहै और मूर्ख पुत्र बैरी है ११ ॥

लुब्धमर्थेनगृह्णीयात्स्तब्धमंजलिकर्मणा ॥
मूर्खंछन्दानुवृत्याचयथार्थत्वेनपण्डितम्१२

टी० । लोभीको धन से, अहङ्कारीको हाथ जोड़ने से, मूर्ख

को उसके अनुसार वर्तने से और पण्डित को सचाई से, वश करना चाहिये १२ ॥

वरन्नराज्यन्नकुराजराज्यम्वरन्नमित्रन्नकुमित्रमित्रम् ॥
वरन्नशिष्योनकुशिष्यशिष्योवरन्नदारानकुदारदारः १३

टी०। राज्य न रहना यह अच्छा परंतु कुराजाका राज्यहोना यह अच्छा नहीं, मित्रका न होना यह अच्छा पर कुमित्र को मित्र करना अच्छा नहीं, शिष्य न हो यह अच्छा पर निन्दित शिष्य शिष्य कहलावे यहअच्छा नहीं, भार्या न रहे यहअच्छा पर कुभार्या का भार्या होना अच्छा नहीं १३ ॥

कुराजराज्येनकुतःप्रजासुखं कुमित्रमित्रेणकुतोऽभिनिवृतिः ॥ कुदारदारैश्चकुतोगृहेरतिःकुशिष्यमध्यापयतःकुतोयशः १४ ॥

टी०। दुष्ट राजाके राज्य में प्रजा को सुख कैसे होसक्ता है कुमित्र मित्रसे आनन्द कैसे होसक्ता है दुष्ट स्त्रीसे गृहमें प्रीति कैसीहोगी औरकुशिष्यको बढ़ानेवालेकी कीर्त्ति कैसेहोगी १४॥

सिंहादेकम्बकादेकंशिक्षेच्चत्वारिकुक्कुटात् ॥
वायसात्पञ्चशिक्षेच्चषट्शुनस्त्रीणिगर्दभात् १५

टी०। सिंहसे एक बकुलेसे एक और कुक्कुटसे चार बातें सीखनी चाहिये कौवेसे पांच कुत्तेसे छः और गदहेसे तीनगुण सीखना उचित है १५॥

प्रभूतङ्कार्यमल्पम्वातन्नरःकर्त्तुमिच्छति ॥
सर्वारम्भेणतत्कार्यंसिंहादेकम्प्रचक्षते १६

टी०। कार्य छोटा हो वा बड़ा जो करणीयहो उसको सब प्रकार के प्रयत्न से करना उचित है इसे सिंहसे एक सीखना कहते हैं १६ ॥

इन्द्रियाणिचसंयम्यवकवत्पण्डितोनरः ॥
देशकालबलंज्ञात्वासर्वकार्याणिसाधयेत् १७

टी० । बिद्वान् पुरुष को चाहिये कि इन्द्रियों का संयम करै के देशकाल और बल को समझ कर बकुला के समान सब कार्य्यको साधे १७ ॥

प्रत्युत्थानंचयुद्धञ्चसम्विभागञ्चबंधुषु ॥
स्वयमाक्रम्यभुक्तञ्च शिक्षेच्चत्वारिकुक्कुटात् १८

टी० । उचित समय में जागना रण में उद्यतरहना और बन्धुओं को उनका भाग देना और आप आक्रमण करके भोजन करै इन चार बातों को कुक्कुट से सीखना चाहिये १८ ॥

गूढमैथुनचारित्वङ्कालेकालेचसंग्रहम् ॥
अप्रमत्तमविश्वासंपंचशिक्षेच्चवायसात् १९

टी० । छिप कर मैथुन करना समय २ पर संग्रह करना सावधान रहना और किसीपर बिश्वास न करना इनपांचोंको कौवे से सीखना उचितहै १९ ॥

वह्वाशीस्वल्पसन्तुष्टःसनिद्रोलघुचेतनः ॥
स्वामिभक्तश्चशूरश्चषडेतेश्वानतोगुणाः २०

टी० । बहुत खाने की शक्ति रहते भी थोड़ेही से संतुष्टहोना गाढ़ निद्रा रहते भी झट पट जागना स्वामीकी भक्ति और शूरता इन छः गुणों को कूकुर से सीखना चाहिये २० ॥

सुश्रान्तोऽपिवहेद्भारंशीतोष्णंनचपश्यति ॥
सन्तुष्टश्चरतेनित्यंत्रीणिशिक्षेच्चगर्दभात् २१

टी० । अत्यन्त थक जाने पर भी बोझा को ढोते जाना शीत और उष्णपर दृष्टि न देना सदा सन्तुष्ट होकर बिचरना इन तीन बातोंको गदहेसे सीखना चाहिये २१ ॥

यएतान्विंशतिगुणानाचरिष्यतिमानवः ॥
कार्यावस्थासुसर्वासुअजेयःसभविष्यति २२

टी० । जोनर इन बीस गुणोंको धारण करेगा वह सदा सब कार्यों में विजयी होगा २२ ॥

इतिवृद्धचाणक्येषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अर्थनाशंमनस्तापंगृहिणीचरितानिच ॥
नीचवाक्यंचापमानंमतिमान्नप्रकाशयेत् १

टी० । धन का नाश मन का ताप गृहिणी का चरित्र नीच का वचन और अपमान इनको बुद्धिमान् न प्रकाश करे १ ॥

धनधान्यप्रयोगेषुविद्यासंग्रहणेषुच ॥
आहारेव्यवहारेचत्यक्तलज्जःसुखीभवेत् २

टी० । अन्न और धन के व्यापार में विद्या के संग्रह करने में आहार और व्यवहार में जो पुरुष लज्जा को दूर रक्खेगा वह सुखी होगा २ ॥

सन्तोषामृततृप्तानांयत्सुखंशान्तिरेवच ॥
नचतद्धनलुब्धानामितश्चेतश्चधावताम् ३

टी० । सन्तोष रूप अमृतसे जो लोग तृप्त होतेहैं उन को जो शान्ति सुख होता है वह धनके लोभियों को जो इधर उधर दौड़ा करते हैं नहीं होता ३ ॥

सन्तोषस्त्रिषुकर्त्तव्यः स्वदारेभोजनेधने ॥
त्रिषुचैवनकर्त्तव्योऽध्ययनेजपदानयोः ४

टी० । अपनी स्त्री भोजन और धन इन तीन में सन्तोष करना चाहिये पढ़ना जप और दान इन तीन में सन्तोष कभी नहीं करना चाहिये ४ ॥

विप्रयोर्विप्रवह्न्योश्चदंपत्योःस्वामिभृत्ययोः॥
अन्तरेणनगन्तव्यंहलस्यवृषभस्यच ५

टी०। दो ब्राह्मण और अग्नि स्त्री पुरुष स्वामी और भृत्य हल और बैल इनके मध्य होकर नहीं जाना चाहिये ५॥

पादाभ्यांनस्पृशेदग्निंगुरुंब्राह्मणमेवच॥
नैवगांनकुमारींचनवृद्धंनशिशुन्तथा ६

टी०। अग्नि गुरु और ब्राह्मण इन को पैर से कभी नहीं छूना चाहिये वैसेही न गौ को,न कुमारी को,न वृद्ध को,और न बालक को पैर से छूना चाहिये ६॥

शकटंपंचहस्तेनदशहस्तेनवाजिनम्॥
हस्तीहस्तसहस्रेणदेशत्यागेनदुर्जनः ७

टी०। गाड़ी को पांच हाथ पर घोड़े को दश हाथ पर हाथी को हजार हाथ पर दुर्जन को देश त्याग करके छोड़ना चाहिये ७॥

हस्तीअंकुशमात्रेणवाजीहस्तेनताड्यते॥
शृंगीलकुटहस्तेन खड्गहस्तेनदुर्जनः ८

टी०। हाथी केवल अंकुश से, घोड़ा हाथ से मारा जाता है सींगवाले जन्तु लाठीयुत हाथसे और दुर्जन तरवार संयुक्त हाथसे दण्ड पाताहै ८॥

तुष्यन्तिभोजनेविप्रामयूराघनगर्जिते॥
साधवःपरसम्पत्तौखलाःपरविपत्तिषु ९

टी०। भोजन के समय ब्राह्मण और मेघ के गर्जने पर मयूर दूसरे को सम्पत्ति प्राप्त होने पर साधु और दूसरे को विपत्ति आने पर दुर्जन सन्तुष्ट होते हैं ९॥

अनुलोमेनवलिनंप्रतिलोमेनदुर्जनम् ॥
आत्मतुल्यबलंशत्रुंविनयेनबलेनवा १०

टी० । बली बैरी को उसके अनुकूल व्यवहार करने से यदि वह दुर्जन हो तो उसे प्रतिकूलता से वश करे बलमें अपने समान शत्रुका विनय से अथवा बलसे जीते १० ॥

बाहुवीर्यंबलंराज्ञोब्राह्मणोब्रह्मविद्बली ॥
रूपयौवनमाधुर्यंस्त्रीणांबलमनुत्तमम् ११

टी० । राजा को बाहुवीर्य बल है और ब्राह्मण ब्रह्मज्ञानी वा वेदपाठी बली होताहै और स्त्रियों को सुंदरता तरुणता और माधुरता अति उत्तम बल है ११ ॥

नात्यन्तंसरलैर्भाव्यंगत्वापश्यवनस्थलीम् ॥
छिद्यन्तेसरलास्तत्रकुब्जास्तिष्ठन्तिपादपाः १२

टी० । अत्यन्त सीधे स्वभाव से नहीं रहना चाहिये इस कारण कि वनमें जाकर देखो सीधे वृक्ष काटे जाते हैं और टेढ़े खड़े रहते है १२ ॥

यत्रोदकन्तत्रवसन्तिहंसास्तथैवशुष्कम्परिवर्जयन्ति ॥
नहंसतुल्येननरेणभाव्यम्पुनस्त्यजन्तःपुनराश्रयन्ते १३

टी० । जहां जल रहताहै वहांही हंस बसते हैं वैसेही सूखे सर को छोड़ देते हैं नर को हंसके समान नहीं रहना चाहिये कि वे बारबार छोड़ देते हैं और बारबार आश्रय लेते हैं १३ ॥

उपार्जितानांवित्तानांत्यागएवहिरक्षणं ॥
तडागोदरसंस्थानांपरिस्रवइवांभसाम् १४

टी० । अर्जित धनों का व्यय करनाही रक्षा है जैसे तडागके भीतरके जल का निकलना १४ ॥

यस्यार्थस्तस्यमित्राणियस्यार्थस्तस्यबांधवाः ॥

यस्यार्थःसपुमांल्लोकेयस्यार्थःसचजीवति १५

टी० । जिसके धन रहता है उसीके मित्र होते हैं जिस के पास अर्थ रहता है उसीके बन्धु होते हैं जिसके धन रहता है वही पुरुष गिना जाता है जिसके अर्थ है वही जीता है १५ ॥

स्वर्गस्थितानामिहजीवलोकेचत्वारिचिन्हानिवसन्तिदेहे
दानप्रसङ्गोमधुराचवाणीदेवार्चनंब्राह्मणतर्पणञ्च १६

टी० । संसारमें आने पर स्वर्गस्थायियों के शरीरमें चार चिन्ह रहते हैं दानका स्वभाव मीठा बचन देवता की पूजा बाह्मणको तृप्त करना अर्थात् जिन लोगों में दान आदि लक्षण रहैं उनको जानना चाहिये किवे अपने पुण्य के प्रभावसे स्वर्गवासी मर्त्य-लोक में अवतार लियेहैं १६ ॥

अत्यन्तकोपःकटुकाचवाणीदरिद्रताचस्वजनेषुवैरम् ॥
नीचप्रसङ्गःकुलहीनसेवाचिन्हानिदेहेनरकस्थितानां १७

टी० । अत्यन्त क्रोध, कटु बचन, दरिद्रता, अपने जनों में बैर, नीच का सङ्ग, कुलहीन की सेवा, ये चिन्ह नरकवासियों की देहोंमें रहते हैं १७ ॥

गम्यतेयदिमृगेन्द्रमन्दिरंलभ्यतेकरिकपोलमौक्तिकम् ॥
जम्बुकालयगतेचप्राप्यतेवत्सपुच्छखरचर्मखण्डनम् १८

टी० । यदि कोई सिंहकी गुहा में जापड़े तो उसको हाथी के कपोल की मोती मिलती है और सियारके स्थानमें जानेपर बछरेकी पूंछ और गदहे के चमड़े का टुकड़ा मिलता है १८ ॥

शुनःपुच्छमिवव्यर्थंजीवितम्विद्ययाविना ॥
नगुह्यगोपनेशक्तन्नचदंशनिवारणे १९

टी० । कुत्ते की पूंछके समान विद्या बिना जीना व्यर्थ है

कुत्ते की पूंछ गोप्यइन्द्रिय को ढांप नहीं सक्ती है न मच्छड़ आदि जीवों को उड़ासक्ती है १९ ॥

वाचांशौचंचमनसःशौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥
सर्वभूतदयाशौचमेतच्छौचंपरार्थिनाम् २०

टी०। वचन की शुद्धि, मनकीशुद्धिइन्द्रियोंका संयमजीवों पर दया और पवित्रता ये परार्थियों को शुद्धि है २०॥

पुष्पेगन्धन्तिलेतैलंकाष्ठेवह्निंपयोघृतम् ॥
इक्षौगुडन्तथादेहेपश्यात्मानम्विवेकतः २१

टी०। फूलमें गन्ध, तिल में तेल, काष्ठमें आग, दूध में घी, ऊख में गुड़ जैसे, वैसेही देहमें आत्मा को विचारसे देखो२१ ॥

इतिवृद्धचाणक्येसप्तमोऽध्यायः ७॥

अधमाधनमिच्छन्तिधनंमानंचमध्यमाः ॥
उत्तमामानमिच्छन्तिमानोहिमहतांधनम् १

टी०। अधम धनही चाहतेहैं मध्यम धन औरमान उत्तम मानहीचाहते हैं इस कारण कि महात्माओं का धन मानहीहै १ ॥

इक्षुरापःपयोमूलंतांबूलम्फलमौषधम् ॥
भक्षयित्वापिकर्त्तव्याःस्नानदानादिकाःक्रियाः २

टी०। ऊख जल दूध मूल पान फल और औषधइनवस्तुओं के भोजन करने परभी स्नान दान आदिक्रियाकरनी चाहिये २ ॥

दीपोभक्षयतेध्वांतंकज्जलंचप्रसूयते ॥
यदन्नम्भक्ष्यतेनित्यंजायतेतादृशीप्रजा ३

टी०। दीप अन्धकारको खाय जाताहै औ काजलको जन्माताहै सत्य है जैसा अन्न सदा खाताहै उसके वैसीही सन्तति होतीहै ३ ॥

वित्तंदेहिगुणान्वितेषुमतिमन्नान्यत्रदेहिक्वचित्
प्राप्तम्वारिनिधेर्जलंघनमुखेमाधुर्य्ययुक्तंसदा ॥
जीवान्स्थावरजंगमांश्चसकलान्संजीव्यभूमण्डलम्
भूयःपश्यतदेवकोटिगुणितंगच्छन्तमम्भोनिधिम् ४

टी०। हे मतिमान् गुणियों को धनदो औरों को कभी मतदो समुद्रसे मेघके मुखमें प्राप्त होकर जल सदा मधुर होजाता है पृथ्वी पर चर अचर सब जीवों को जिला कर फिर देखो वही जल कोटिगुणा होकर उसी समुद्रमें चला जाताहै ४॥

चाण्डालानांसहस्रैश्चसूरिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥
एकोहियवनःप्रोक्तोननीचोयवनात्परः ५

टी०। तत्वदर्शियों ने कहा है कि सहस्र चाण्डालों के तुल्य एक यवन होता है और यवन से नीच दूसरा कोई नही है ५ ॥

तैलाभ्यंगेचिताधूमेमैथुनेक्षौरकर्मणि ॥
तावद्भवतिचांडालोयावत्स्नानंसमाचरेत् ६

टी०। तेल लगाने पर, चिता के धूम लगने पर, स्त्रीप्रसङ्ग करने पर बार बनाने पर तब तक चाण्डालही बना रहता है जब तक स्नान नही करता ६ ॥

अजीर्णेभेषजम्वारिजीर्णेवारिबलप्रदम् ॥
भोजनेचामृतम्वारिभोजनान्तेविषप्रदम् ७

टी०। अपच होने पर जल औषध है पचजाने पर जल बल को देताहै भोजन के समय पानी अमृत के समान है भोजन के अन्तमें विष का फल देता है ७ ॥

हतंज्ञानंक्रियाहीनंहतश्चाज्ञानतोनरः ॥
हतन्निर्नायकंसैन्यंस्त्रियोनष्टाह्यभर्तृकाः ८

टी०। क्रियाके बिना ज्ञान व्यर्थहै अज्ञान से नर मारा जाता

है सेनापति के बिना सेना नाश जाती है स्वामी हीन स्त्री नष्ट होजाती हैं ८॥

वृद्धकालेमृताभार्याबंधुहस्तगतंधनम् ॥
भोजनंचपराधीनंतिस्रःपुंसांविडम्बनाः ९

टी०। बुढ़ापे में मरी स्त्री, बन्धु के हाथ में गया धन, दूसरे के आधीन भोजन ये तीन पुरुषों की विडम्बना हैं अर्थात् दुःख दायक होतेहैं ९॥

अग्निहोत्रम्विनावेदानचदानम्विनाक्रिया ॥
नभावेनविनासिद्धिस्तस्माद्भावोहिकारणम् १०

टी०। अग्निहोत्र के बिना वेद का पढ़ना व्यर्थ होताहै दान के बिना यज्ञादिक क्रिया नहीं बनती भावके बिना कोई सिद्ध नहीं होती इस हेतु भू मही सब का कारण है १०॥

नदेवोविद्यतेकाष्ठेनपाषाणेनमृण्मये ॥
भावेहिविद्यतेदेवस्तस्माद्भावोहिकारणम् ११

टी०। देवता काठ में नहीं है न पाषाणमें है न मृत्तिका की मूर्ति मेंहै निश्चयहै कि देवता भावमें विद्यमान इस हेतु भावही सबका कारणहै ११॥

शांतितुल्यंतपोनास्तिनसंतोषात्परंसुखम् ॥
नतृष्णायाःपरोव्याधिर्नचधर्मोदयापरः १२

टी०। शांतिके समान दूसरा तप नहीं है न संतोषसे परे सुख न तृष्णासे दूसरी व्याधि है न दयासे अधिक धर्म १२॥

क्रोधोवैवस्वतोराजातृष्णावैतरणीनदी ॥
विद्याकामदुघाधेनुःसंतोषोनन्दनंवनम् १३

टी०। क्रोध यमराजहै और तृष्णा वैतरणी नदीहै विद्या कामधेनु गायहै और संतोष इन्द्रकी वाटिकाहै १३॥

गुणोभूषयतेरूपंशीलंभूषयतेकुलम् ॥
सिद्धिर्भूषयतेविद्यांभोगोभूषयतेधनम् १४

टी०। गुण रूपको भूषित करताहै शील कुलको अलंकृत करताहै सिद्धि विद्याको भूषित करतीहै और भोग धनको भूषित करताहै १४ ॥

निर्गुणस्यहतंरूपंदुःशीलस्यहतंकुलम् ॥
असिद्धस्यहताविद्याअभोगेनहतंधनम् १५

टी०। निर्गुण की सुंदरता व्यर्थ है शील हीनका कुल निंदित होता है सिद्धिके विना विद्या व्यर्थहै भोगकेविनाधनव्यर्थहै१५ ॥

शुद्धम्भूमिगतंतोयंशुद्धानारीपतिव्रता ॥
शुचिःक्षेमकरोराजासंतोषीब्राह्मणःशुचिः १६

भूमिगत जल पवित्र होताहै पतिव्रता स्त्री पवित्र होती है कल्याण करनेवाला राजा पवित्र गिना जाताहै ब्राह्मण संतोषी शुद्ध होता है १६ ॥

असंतुष्टाद्विजानष्टाःसंतुष्टाश्चमहीभृतः ॥
सलज्जागणिकानष्टानिर्लज्जाश्चकुलांगनाः १७

टी०। असंतोषी ब्राह्मण निंदित गिनेजातेहैं औ संतोषीराजा सलज्जावेश्याऔर लज्जाहीनकुलस्त्रीनिंदित गिनीजातीहैं१७ ॥

किंकुलेनविशालेनविद्याहीनेनदेहिनाम् ॥
दुष्कुलंचापिविदुषोदेवैरपिसपूज्यते १८

टी०। विद्याहीन बड़ेकुलसे मनुष्योंको क्या लाभ है विद्वान् का नीच भी कुल देवतों से पूजा पाता है १८ ॥

विद्वान्प्रशस्यतेलोकेविद्वान्सर्वत्रगौरवम् ॥
विद्ययालभतेसर्वंविद्यासर्वत्रपूज्यते १९

टी०। संसार में विद्वान्ही प्रशंसित होताहै विद्वान्ही सब स्थान में आदर पाता है विद्याही से सब मिलता है विद्याही सब स्थान में पूजित होती है १६॥

रूपयौवनसंपन्नाविशालकुलसंभवाः॥
विद्याहीनानशोभंतेनिर्गंधाइवकिंशुकाः २०

टी०। सुंदर तरुणतायुत और बड़े कुलमें उत्पन्न भी विद्या हीन नहीं शोभते जैसे विना गंध के फूल २०॥

मांसभक्षाःसुरापानामूर्खाश्चाक्षरवर्जिताः॥
पशुभिःपुरुषाकारैर्भाराक्रांतास्तिमेदिनी २१

टी०। मांस के भक्षण करनेवाले मदिरा पानकरनेवाले निरक्षरमूर्खपुरुषाकार इनपशुओं केभारसेपृथिवीपीड़ितरहतीहै२१॥

अन्नहीनोदहेद्राष्ट्रम्मंत्रहीनश्चऋत्विजः॥
यजमानंदानहीनोनास्तियज्ञसमोरिपुः २२

टी०। यज्ञ यदि अन्न हीन होतो राज्यको मंत्र हीन होतो ऋत्विजों को दानहीन हो तो यजमानको जलाता है इसकारण यज्ञ के समान कोई शत्रुभी नहीं है २२॥

इतिवृद्धचाणक्येऽष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

मुक्तिमिच्छसिचेत्तातविषयान्विषवत्त्यज॥
क्षमार्जवदयाशौचंसत्यपीयूषवत्पिव १

टी०। हे भाई यदि मुक्ति चाहतेहो तो विषयों को विषके समान छोड़दो सहनशीलता सरलता दया पवित्रता औरसचाई को अमृत की नाईं पियो १॥

परस्परस्यमर्माणियेभाषंतेनराधमाः॥
तएवविलयंयांतिवल्मीकोदरसर्पवत् २

टी० । जो नराधम परस्पर अंतरात्माके दुःखदायकवचनको भाषण करते हैं निश्चय है कि वे नष्ट होजाते हैं जैसे बिमौटमें पड़कर सांप २ ॥

गंधंसुवर्णेफलमिक्षुदंडेनाकारिपुष्पंखलुचन्दनस्य॥ विद्वान्धनीनृपतिर्दीर्घजीवीधातुःपुराकोऽपिनबुद्धिदोऽभूत् ३

टी० । सुवर्ण में गंध ऊखमें फल चन्दन में फूल विद्वान् धनी राजा चिरजीवी न किया इससे निश्चयहै कि विधाताको पहिले कोई बुद्धिदाता न था ३ ॥

सर्वौषधीनाममृताप्रधानासर्वेषुसौख्येष्वशनंप्रधानम् ॥ सर्वेन्द्रियाणांनयनंप्रधानंसर्वेषुगात्रेषुशिरःप्रधानम् ४

टी० । सब औषधियों में गुरुच प्रधानहै सब सुखमें भोजन श्रेष्ठहै सब इन्द्रियों में आंखउत्तमहै सबअंगों में शिरश्रेष्ठहै४ ॥

दूतोनसंचरतिखेनचलेच्चवार्तापूर्वंनजल्पितमिदं नचसंगमोऽस्ति ॥ व्योम्निस्थितंरविशशिग्रहणं प्रशस्तंजानातियोद्विजवरःसकथंनविद्वान् ५

टी० । आकाश में दूत न जासक्ता न बातों की चर्चा चलसक्ती न पहिलेही से किसीने कहि रक्खा है न किसीसे संगम होसक्ता ऐसी दशा में आकाश में स्थित सूर्य चन्द्र के ग्रहण को जो द्विजवर स्पष्ट जानता है वह कैसे विद्वान् नहीं है ५ ॥

विद्यार्थीसेवकःपांथःक्षुधार्त्तोभयकातरः ॥ भांडारीप्रतिहारीचसप्तसुप्तान्प्रबोधयेत् ६

टी० । विद्यार्थी सेवक पथिक भूखसे पीड़ित भयसे कातर भंडारी द्वारपाल येसात यदि सूते हों तो जगादेनाचाहिये ६ ॥

अहिंनृपंचशार्दूलंवृद्धंचबालकंतथा ॥ परश्वानंचमूर्खंचसप्तसुप्तान्नबोधयेत् ७

टी० । सांप राजा व्याघ्र दररे वलेही बालक दूसरे का कुत्ता और मूर्ख येसात सूतेहों तो नहीं जगाना चाहिये ७ ॥

अर्थाधीताश्चयैर्वेदास्तथाशूद्रान्नभोजिनः ॥
तेद्विजाःकिंकरिष्यंतिनिर्विषाइवपन्नगाः ८

टी० । जिनने धनके अर्थ वेदको पढ़ा वैसेही जो शूद्रका अन्न भोजनकरतेहैं वेब्राह्मणविषहीनसर्पकेसमान क्याकरसक्ते हैं ८

यस्मिन्रुष्टेभयंनास्तितुष्टेनैवधनागमः ॥
निग्रहोऽनुग्रहोनास्तिसरुष्टःकिंकरिष्यति ९

टी० । जिसके क्रुद्ध होनेपर न भयहै न प्रसन्न होनेपर धनका लाभ न दंड वा अनुग्रह होसकाहै वह रुष्ट होकर क्याकरेगा ९ ॥

निर्विषेणापिसर्पेणकर्तव्यामहतीफणा ॥
विषमस्तुनचाप्यस्तुघटाटोपोभयंकरः १०

टी० । विषहीनभी सांपको अपनी फणा बढ़ाना चाहिये इस कारण कि विषहो वा न हो आडंबर भयजनक होताहै १० ॥

प्रातर्द्यूतप्रसंगेनमध्याह्नेस्त्रीप्रसङ्गतः ॥
रात्रौचौरप्रसंगेनकालोगच्छतिधीमताम् ११

टी० । प्रातःकालमें जुआड़ियोंकी कथासे अर्थात् महाभारत से मध्याह्नमें स्त्रीके प्रसंगसे अर्थात् रामायणसे रात्रिमें चोरकी वार्तासे अर्थात् भागवतकी वार्तासे अर्थात् भागवतसे बुद्धिमानों का समय बीतताहै ११ ॥ तात्पर्य यह कि महाभारतके सुननेसे यह निश्चय होजाताहै कि जुआ कलह और छलका घरहै इस लोक और परलोकमें उपकार करनेवाले कामोंको महाभारतमें लिखीहुई रीतियों से करने पर उन कामों का पूराफल होताहै इसकारण बुद्धिमान् लोग प्रातःकालहीमें महाभारतको सुनतेहैं जिसमें दिनभर उसी रीतिसे काम करते जायँ रामायण सुनने

से स्पष्ट उदाहरण मिलताहै कि स्त्रीके बश होनेसे अत्यन्तदुःख होताहै और परस्त्री पर दृष्टि देनेसे पुत्र कलत्र जड़ मूलके साथ पुरुषका नाश होजाताहै इसहेतु मध्याह्नमें अच्छे लोग रामायणको सुनतेहैं प्रायः रात्रिमें लोग इंद्रियोंके बश होजातेहैं और इन्द्रियोंका यह स्वभावहै कि मनको अपने अपने बिषयों में लगाकर जीवको बिषयोंमें लगादेतीहैं इसी हेतुसे इन्द्रियों को आत्मा पहारी भी कहतेहैं और जो लोग रातको भागवत सुनतेहैं वे कृष्णके चरित्रको स्मरणकरके इन्द्रियों के बश नही होते क्योंकि सोलह हजारसे अधिक स्त्रियोंके रहतेभी कृष्णचन्द्र इन्द्रियों के बश न हुये और इन्द्रियों के संयम की रीतिभी जान जातेहैं ११ ॥

स्वहस्तग्रथितामालास्वहस्तघृष्टचन्दनम् ॥
स्वहस्तलिखितंस्तोत्रंशक्रस्यापिश्रियंहरेत् १२

टी० । अपने हाथसे गुथीमाला अपने हाथसे घिसा चन्दन अपने हाथसे लिखास्तोत्र येइन्द्रकीभी लक्ष्मीको हरलेतेहैं१२॥

इक्षुदंडास्तिलाःशूद्राःकांताहेमचमेदिनी ॥
चंदनंदधितांबूलंमर्दनंगुणबर्द्धनम् १३

टी० । ऊख तिल शूद्र कांता सोना पृथ्वी चंदन दही पान ये ऐसे पदार्थहैं कि इनका मर्दन गुण बर्द्धन है १३ ॥

दरिद्रताधीरतयाविराजतेकुवस्त्रताशुभ्रतयाविराजते॥कदन्नताचोष्णतयाविराजतेकुरूपताशीलतयाविराजते१४

टी० । दरिद्रताभी धीरतासे शोभतीहै स्वच्छतासे कुवस्त्र सुंदर ज्ञान पड़ताहै कुअन्नभी उष्णतासे मीठा लगताहै कुरूपताभी सुशीलहो तो शोभतीहै १४॥

इतिवृद्धचाणक्येनवमोऽध्यायः॥९॥

अथद्वादशोऽध्यायः ॥

धनहीनोनहीनश्चधनीकःससुनिश्चयः ॥
विद्यारत्नेनहीनोयःसहीनःसर्ववस्तुषु १

टी० धनहीन हीन नहीं गिनाजाता निश्चयहै किवहधनीही है विद्यारत्न से जोहीनहै वह सब वस्तुओं में हीनहै १ ॥

दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंपिवेज्जलम् ॥
शास्त्रपूतंवदेद्वाक्यंमनःपूतंसमाचरेत् २

टी०। दृष्टिसे शोधकर पांवरखना उचितहै वस्त्रसे शुद्धकर जलपीवै शास्त्रसे शुद्धकर वाक्य बोले मन से शोचकर कार्य करनाचाहिये २ ॥

सुखार्थीचेत्त्यजेद्विद्यांविद्यार्थीचेत्त्यजेत्सुखम् ॥
सुखार्थिनःकुतोविद्यासुखंविद्यार्थिनःकुतः ३

टी०। यदि सुखचाहै तो विद्याको छोड़दे यदि विद्याचाहैतो सुखका त्याग करै सुखार्थीको विद्या कैसेहोगी और विद्यार्थी को सुख कैसे होगा ३ ॥

कवयःकिंनपश्यंतिकिंनकुर्वंतियोषितः ॥
मद्यपाःकिंनजल्पंतिकिंनखादंतिवायसाः ४

टी०। कविक्या नहीं देखते स्त्रीक्या नहीं करसक्ती मद्यप क्या नहीं बकते कौवे क्यानहीं खाते ४ ॥

रंकंकरोतिराजानंराजानंरंकमेवच ॥
धनिनंनिर्द्धनंचैवनिर्द्धनंधनिनंविधिः ५

टी०। निश्चयहै कि विधि रंकको राजा राजाको रंक धनीको निर्द्धन निर्द्धनको धनी करदेतीहै ५ ॥

लुब्धानांयाचकःशत्रुर्मूर्खाणांबोधकोरिपुः ॥

जारस्त्रीणांपतिःशत्रुश्चौराणांचन्द्रमारिपुः ६

टी०। लोभियों का याचक बैरी होताहै मूर्खोंका समझाने वाला शत्रु होताहै पुंश्चली स्त्रियोंका पतिशत्रुहै चोरों का चन्द्रमा शत्रु है ६॥

येषांनविद्यानतपोनदानंनचापिशीलंनगुणोनधर्मः॥
तेमृत्युलोकेभुविभारभूतामनुष्यरूपेणमृगाश्चरन्ति ७

टी०। जिन लोगोंको न विद्याहै नतपहै नदानहै न शीलहै न गुणहै और न धर्महै वे ससारमें पृथ्वीपर भाररूप होकर मनुष्य रूपसे मृग फिर रहेहैं ७॥

अंतःसारविहीनानामुपदेशोनजायते॥
मलयाचलसंसर्गान्नवेणुश्चंदनायते ८

टी०। गंभीरता बिहीन पुरुषो को शिक्षा देना सार्थक नहीं होता मलयाचलके संगसे बांस चंदन नहीं होजाता ८॥

यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिकिम्॥
लोचनाभ्यांविहीनस्यदर्पणःकिंकरिष्यति ९

टी०। जिसकी स्वाभाविक बुद्धि नहीं है उसका शास्त्र क्या करसक्ताहै आंखों से हीनको दर्पण क्या करेगा ९॥

दुर्जनंसज्जनंकर्त्तुमुपायोनहिभूतले॥
अपानंशतधाधौतंनश्रेष्ठमिन्द्रियंभवेत् १०

टी०। दुर्जनको सज्जन करनेके लिये पृथ्वीतलमें कोईउपाय नहीं है मलके त्याग करनेवाली इन्द्रिय सौबारभी धोईजाय तो भी श्रेष्ठ इन्द्रिय नहोगी १०॥

आप्तद्वेषाद्भवेन्मृत्युःपरद्वेषाद्धनक्षयः॥
राजद्वेषाद्भवेन्नाशोब्रह्मद्वेषात्कुलक्षयः ११

टी० । ऋषों के द्वेपसे मृत्यु होती है शत्रु से विरोध करने से धनका क्षय होता है राजा के द्वेष से नाश होता है और ब्राह्मण के द्वेष से कुलका क्षय होता है ११ ॥

वरंवनेव्याघ्रगजेंद्रसेवितेद्रुमालयेपत्रफलांबुसेवनम् ॥ तृणेषुशय्याशतजीर्णवल्कलंनवंधुमध्येधनहीनजीवनम् १२

टी० । वनमें बाघ और बड़े बड़े हाथियों से सेवित वृक्ष के नीचे पत्ता फल खाना वा जलकापीना घासपरसोना सौटुकड़े के वकलों को पहिनना ये श्रेष्ठ हैं पर बन्धुओं के मध्य धन हीन जीना श्रेष्ठ नहीं है १२ ॥

विप्रोवृक्षस्तस्यमूलंचसंध्यावेदःशाखाधर्मकर्माणिपत्रम् ॥ तस्मान्मूलंयत्नतोरक्षणीयंछिन्नेमूलेनैवशाखानपत्रम् १३

टी० । ब्राह्मण वृक्षहै उसकी जड़ सन्ध्या है वेदशाखाहै और धर्मके कर्म पत्ते हैं इसकारण प्रयत्न करके जड़की रक्षा करनी चाहिये जड़ कटजानेपर न शाखा रहेगी न पत्ते १३ ॥

माताचकमलादेवीपितादेवोजनार्दनः ॥
बान्धवाविष्णुभक्ताश्चस्वदेशोभुवनत्रयम् १४

टी० । जिसकी लक्ष्मी माताहै और विष्णु भगवान् पिताहैं और विष्णुके भक्तहीबांधवहैं उसको तीनों लोक स्वदेशहीहैं१४ ॥

एकवृक्षसमारूढानानावर्णाविहंगमाः ॥
प्रभातेदिक्षुदशसुकातत्रपरिवेदना १५

टी० । नानाप्रकारके पखेरू एक वृक्षपर बैठतेहैं प्रभातसमय दश दिशामें होजातेहैं उसमें क्या सोचहै १५ ॥

बुद्धिर्यस्यबलंतस्यनिर्बुद्धेश्चकुतोबलम् ॥
वनेसिंहोमदोन्मत्तोजम्बुकेननिपातितः १६

टी० । जिसको बुद्धिहै उसीको बलहै निर्बुद्धिको बल कहांसे

होगा देखो बनमें मदसे उन्मत्त सिंह सियारसे मारागया १६ ॥

काचिन्ताममजीवनेयदिहरिर्विश्वम्भरोगीयते
नोचेदर्भकजीवनायजननीस्तन्यंकथंनिःसरेत् ॥
इत्यालोच्यमुहुर्मुहुर्यदुपतेलक्ष्मीपतेकेवलम्
त्वत्पादाम्बुजसेवनेनसततंकालोमयानीयते १७

टी० । मेरे जीवनमें क्या चिन्ताहै यदि हरि विश्वका पालने वाला कहलाताहै ऐसा न हो तो बच्चेके जीनेके हेतु माताके स्तनमें दूध कैसे बनाते इसको वारवार बिचार करके यदुपति हे लक्ष्मीपति सदा केवलआपके चरणकमलकी सेवासे मैं समय को बिताताहूं १७ ॥

गीर्वाणवाणीषुविशिष्टबुद्धिस्तथापिभाषांतरलोलुपोहम्॥
यथासुधायाममरेषुसत्यांस्वर्गांगनानामधरासवेरुचिः१८

टी० । यद्यपि संस्कृतहीभाषामें बिशेष ज्ञानहै तथापि दूसरी भाषाका भी मैं लोभीहूं जैसे अमृतके रहते भी देवतों की इच्छा स्वर्गकी स्त्रियों के ओष्ठके, आसवमें रहतीहै १८ ॥

अन्नाद्दशगुणंपिष्टम्पिष्टाद्दशगुणंपयः ॥
पयसोऽष्टगुणम्मांसंमांसाद्दष्टगुणंघृतम् १९

टी० । चावलसे दशगुणा पिसानमें गुणहै,पिसानसे दशगुणा दूधमें,दूधसे आठगुणा मांसमें,मांससे दशगुणा घीमें १९ ॥

शाकेनरोगावर्द्धन्तेपयसावर्द्धतेतनुः ॥
घृतेनवर्द्धतेवीर्य्यंमांसान्मांसंप्रवर्द्धते २०

टी० । सागसे रोग बढ़ताहै दूधसे शरीर बढ़ताहै घी से बीर्य बढ़ताहै मांससे मांस बढ़ताहै २० ॥

इतिवृद्धचाणक्येदशमोऽध्यायः १० ॥

दातृत्वंप्रियवक्तृत्वन्धीरत्वमुचितज्ञता ॥
अभ्यासेननलभ्यन्तेचत्वारःसहजागुणाः १

टी०। उदारता,प्रियबोलना,धीरता,उचितका ज्ञान ये अभ्यास से नही मिलते ये चारो स्वाभाविक गुणहैं १ ॥

आत्मवर्गंपरित्यज्यपरवर्गंसमाश्रयेत् ॥
स्वयमेवलयंयातियथाराजन्यधर्मतः २

टी०। जो अपनी मण्डलीको छोड़ परके वर्गका आश्रय लेता है वह आपही लयको प्राप्तहोजाताहै जैसे राजाके अधर्मसे २ ॥

हस्तीस्थूलतनुःसचांकुशवशःकिंहस्तिमात्रोऽंकुशो
दीपेप्रज्वलितेप्रणश्यतितमःकिन्दीपमात्रन्तमः ॥
वज्रेणापिहताःपतन्तिगिरयःकिम्वज्रमात्रन्नगाः
तेजोयस्यविराजतेसबलवान्स्थूलेषुकःप्रत्ययः ३

टी०। हाथीका स्थूल शरीरहै वहभी अंकुशके वश रहताहै तो क्या हस्तीके समान अंकुशहै दीपके जलनेपर अन्धकार आपही नष्टहोजाताहै तो क्या दीपके तुल्य तमहै बिजुलीके मारे पर्वत गिरजातेहैं तो क्या बिजुली पर्वतकेसमानहै जिसमेंतेजबिराजमान रहताहै वहबलवान गिनाजाताहै मोटेका कौनबिश्वासहै३॥

कलौदशसहस्राणिहरिस्त्यजतिमेदिनीम् ॥
तदर्द्धंजान्हवीतोयंतदर्द्धंग्रामदेवता ४

टी०। कलियुगमें दशसहस्रबर्षके बीतनेपर विष्णु पृथ्वीको छोड़देतेहैं उसके आधेपर गंगाजी जलको तिसके आधेके बीतने पर ग्रामदेवता ग्रामको ४ ॥

गृहासक्तस्यनोविद्यानोदयामांसभोजिनः ॥
द्रव्यलुब्धस्यनोसत्यंस्त्रैणस्यनपवित्रता ५

टी०। गृहमें आसक्त पुरुषोंको विद्या नहीं होती मांसके आहारीको दया नहीं द्रव्य लोभीको सत्यता नहीं होती और व्यभिचारीको पवित्रता नहीं होती ५॥

नदुर्जनःसाधुदशामुपैतिवहुप्रकारैरपिशिक्ष्यमाणः ॥
आमूलसिक्तःपयसाघृतेननिम्बवृक्षोमधुरत्वमेति ६

टी०। निश्चयहै कि दुर्जन अनेक प्रकारसे सिखलायाभीजाय पर उसमें साधुता नहीं आती दूध और घीसे जड़से पाली पर्यंत नींबकावृक्ष सींचाभीजाय पर उसमें मधुरतानहीं आती६॥

अन्तर्गतमलोदुष्टस्तीर्थस्नानशतैरपि ॥
नशुध्यतितथाभांडंसुरायादाहितञ्चयत् ७

टी०। जिसके हृदयमें पापहै वही दुष्टहै वह तीर्थमें सौबार स्नानसेभी शुद्ध नहीं होता जैसे मदिरा का पात्र जलाया भी जाय तोभी शुद्ध नहीं होता ७॥

नवेत्तियोयस्यगुणप्रकर्षंसतंसदानिंदतिनात्रचित्रं ॥ यथा किरातीकरिकुम्भलब्धांमुक्तांपरित्यज्यविभर्तिगुंजाम् ८

टी०। जो जिसके गुणकी प्रकर्षता नहीं जानता वहनिरन्तर उसकी निन्दा करताहै जैसे भिल्लिनी हाथीके मस्तकके मोती को छोड़ घुंघुचीको पहिनतीहै ८॥

येतुसम्वत्सरंपूर्णंनित्यंमौनेनभुंजते ॥
युगकोटिसहस्रंतैःस्वर्गलोकेमहीयते ९

टी०। जो बर्षभर नित्य चुपचाप भोजन करताहै वह सहस्र कोटि युगलों स्वर्गलोकमें पूजा जाताहै ९॥

कामक्रोधौतथालोभंस्वादुशृङ्गारकौतुके ॥
अतिनिद्रातिसेवेचविद्यार्थीह्यष्टवर्जयेत् १०

टी० । काम क्रोध वैसेही लोभ मीठी वस्तु श्रृंगार खेल अति निद्रा और अति सेवा इन आठोंको विद्यार्थी छोड़ देवें १० ॥

अकृष्टफलमूलानिवनवासरतिःसदा ॥
कुरुतेऽहरहःश्राद्धमृषिविप्रःसउच्यते ११

टी० । विना जोती भूमिसे उत्पन्न फल वा मूलको खाकर सदा वनवास करताहो और प्रतिदिन श्राद्ध करे ऐसा ब्राह्मण ऋषि कहलाताहै ११ ॥

एकाहारेणसन्तुष्टःषट्कर्मनिरतःसदा ॥
ऋतुकालाभिगामीचसविप्रोद्विजउच्यते १२

टी० । एक समय के भोजनसे सन्तुष्ट रहकर पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना कराना दान देना और लेना इन छः कर्मों में सदा रतहो और ऋतुकालमें स्त्रीका संग करे तो ऐसे ब्राह्मण को द्विज कहतेहैं १२ ॥

लौकिकेकर्मणिरतःपशूनांपरिपालकः ॥
वाणिज्यकृषिकर्मायःसविप्रोवैश्यउच्यते १३

टी० । सांसारिक कर्ममेंरतहो और पशुओंकोपालनवनियाई और खेती करनेवाला हो वह विप्र वैश्य कहलाताहै १३ ॥

लाक्षादितैलनीलीनांकौसुम्भमधुसर्पिषाम्॥
विक्रेतामद्यमांसानांसविप्रःशूद्रउच्यते १४

टी० । लाह आदि पदार्थ तेल नीली पीताम्बर मधु घी मद्य और मांस जो इनका बेचनेवाला वह ब्राह्मण शूद्र कहा जाताहै १४ ॥

परकार्यविहन्ताचदांभिकःस्वार्थसाधकः ॥
छलीद्वेषीमृदुःक्रूरोविप्रोमार्जारउच्यते १५

टी० । दूसरे के कामका बिगाड़नेवाला दम्भी अपनेही अर्थ

का साधनेवाला छली द्वेषी ऊपर मृदु और अन्तःकरण में क्रूर हो तो वह ब्राह्मण बिलार कहा जाता है १५ ॥

वापीकूपतडागानामाराम सुरवेश्मनाम् ॥
उच्छेदने निराशंकः स विप्रो म्लेच्छ उच्यते १६

टी० । बावली कुंआ तालाव बाटिका देवालय इनके उच्छेदन करनेमें जो निडर हो वह ब्राह्मण म्लेच्छ कहलाताहै १६ ॥

देवद्रव्यं गुरुद्रव्यं परदाराभिमर्शनम् ॥
निर्वाहः सर्वभूतेषु विप्रश्चाण्डाल उच्यते १७

टी० । देवता का द्रव्य और गुरूका द्रव्य जो हरताहै और परस्त्रीसे संग करताहै और सब प्राणियों में निर्वाह करलेता है वह बिप्र चांडाल कहलाताहै १७ ॥

देयं भोज्यधनं धनं सुकृतिभिर्नो संचयस्तस्य वै
श्रीकर्णस्य बलेश्च विक्रमपतेरद्यापि कीर्तिः स्थिता ॥
अस्माकं मधु दानभोगरहितं नष्टं चिरात्संचितम्
निर्वाणादिति नैजपादयुगुलं घर्षंत्यहो मक्षिकाः १८

टी० । सुकृतियों को चाहिये कि भोग योग्य धनको और द्रव्य को देवें कभी न संचें कर्ण बलि बिक्रमादित्य इन राजाओं की कीर्ति इस समय पर्यन्त वर्त्तमानहै दान भोगसे रहित बहुतदिन से संचित हमारे लोगोंका मधु नष्ट होगया निश्चयहै किमधुमक्खियांमधुके नाशहोनेकेकारणदोनों पावों कोघिसाकरतीहैं १८॥

इति वृद्धचाणक्ये एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

## अथ द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

सानंदं सदनं सुतास्तु सुधियः कांता प्रियालापिनी
इच्छापूर्तिधनं स्वयोषिति रतिः स्वाज्ञापराः सेवकाः ॥

आतिथ्यंशिवपूजनंप्रतिदिनंमिष्टान्नपानंगृहे
साधोःसंगमुपासतेचसततंधन्योगृहस्थाश्रमः १

टी०। यदि आनंद युत घर मिले और लड़के पंडितहों स्त्री मधुरभाषिणीहो इच्छा के अनुसार धनहो अपनीही स्त्रीमें रति हो आज्ञापालक सेवक मिलें अतिथिकी सेवा और शिवकी पूजा होती जाय प्रति दिन गृहही में मीठाअन्न औरजलमिले सर्वदा साधुके संगकी उपासना होतो गृहस्थाश्रमही धन्यहै १ ॥

आर्तेषुविप्रेषुदयान्वितश्चयच्छ्रद्धयास्वल्पमुपैतिदानम् ॥
अनंतपारंसमुपैतिराजन्यद्दीयतेतन्नलभेद्द्विजेभ्यः २

टी०। जोदयावान पुरुष आर्त ब्राह्मणों को श्रद्धासे थोड़ाभी दान देताहै उस पुरुषको अनन्त होकर वह मिलताहै जोदिया जाताहै वह ब्राह्मणों से नहीं मिलता २ ॥

दाक्षिण्यंस्वजनेदयापरजनेशाठ्यंसदादुर्जने
प्रीतिःसाधुजनेस्मयःखलजनेविद्वज्जनेचार्जवम् ॥
शौर्यंशत्रुजनेक्षमागुरुजनेनारीजनेधूर्त्तता
इत्थंयेपुरुषाःकलासुकुशलास्तेष्वेवलोकस्थितिः ३

टी०। आपने जनमें दक्षता दूसरे जनमें दया सदा दुर्जनमें दुष्टता साधु जनमें प्रीति खलमें अभिमान विद्वानोंमें सरलता शत्रुजनमें शूरता बड़े लोगोंके विषयमें क्षमा स्त्रीसे काम पड़ने पर धूर्तता इस प्रकारसे जोलोग कलामें कुशल होतेहैं उन्हीं में लोककी मर्यादा रहतीहै ३ ॥

हस्तौदानविवर्जितौश्रुतिपुटौसारस्वतद्रोहिणौ
नेत्रेसाधुविलोकनेनरहितेपादौनतीर्थंगतौ ॥
अन्यायार्जितवित्तपूर्णमुदरंवगेर्णतुंगंशिरो
रेरेजम्बुकमुंचमुंचसहसानीचंसुनिंद्यम्वपुः ४

टी०। हाथ दान रहितहै कान वेदशास्त्र का बिरोधीहै नेत्रों ने साधुका दर्शननहीं किया पांवने तीर्थ गमन नहीं किया अन्याय से अर्जित धनसे उदर भराहै और गर्वसे शिर ऊंचा होरहाहै रेरे सियार ऐसे नीच निंद्य शरीरको शीघ्र छोड़ ४॥

येषांश्रीमद्यशोदासुतपदकमलेनास्तिभक्तिर्नराणां
येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथनेनानुरक्तारसज्ञा॥
येषांश्रीकृष्णलीलाललितरसकथासादरौनैवकर्णौ
धिक्तान्धिक्तान्धिगेतान्कथयतिसततंकीर्त्तनस्थोमृदंगः ५

टी०। श्री यशोदासुतके पदकमलमें जिनलोगोंकी भक्तिनहीं रहती जिन लोगोंकी जीभ अहीरों की कन्याओं के प्रियके अर्थात् कृष्णके गुणगानमें प्रीति नहीं रखती और श्रीकृष्णजीकी लीला की ललित कथाका आदर जिनके कान नहीं करते उनलोगोंको धिकहैउन्हीं लोगोको धिकहैऐसाकीर्तनका मृदंगसदाकहताहै ५॥

पत्रंनैवयदाकरीलविटपेदोषोवसंतस्यकिम्
नोलूकोऽप्यवलोकतेयदिदिवासूर्यस्यकिंदूषणम्॥
वर्षानैवपतंतिचातकमुखेमेघस्यकिंदूषणम्
यत्पूर्वंविधिनाललाटलिखितंतन्मार्जितुंकःक्षमः ६

टी०। यदि करीलके वृक्षमें पत्ते नहीं होते तो बसन्तका क्या अपराधहै यदि उलूक दिनमें नहीं देखता तो सूर्यका क्या दोषहै बर्षा चातकके मुखमें नहीं पड़ती इसमें मेघका क्या अपराधहै पहिलेही ब्रह्माने जो कुछ ललाटमें लिखरक्खाहै उसे मिटाने को कौन समर्थहै ६॥

सत्संगाद्भवतिहिसाधुताखलानां साधूनांनहि
खलसंगतःखलत्वम्॥ आमोदंकुसुमभवंमृदे
वधत्ते मृद्गन्धन्नहिकुसुमानिधारयन्ति ७

टी० । निश्चयहै कि फूलोंके संगसे दुर्जनोंमें साधुता आजा-तीहै परन्तु साधुओंमें दुष्टों की संगति से असाधुता नहीं आती फूलके गन्धको मिट्टी लेलेतीहै मिट्टीके गन्धको फूल कभीनहीं धारण करते ७ ॥

साधूनांदर्शनंपुण्यंतीर्थभूताहिसाधवः ॥
कालेनफलतेतीर्थंसद्यःसाधुसमागमः ८

टी० । साधुओंका दर्शनही पुण्यहै इसकारण कि साधु तीर्थ-रूपहैं समय से तीर्थ फल देताहै साधुओंका संग शीघ्रही काम करदेता है ८ ॥

विप्रास्मिन्नगरेमहान्कथयकस्तालद्रुमाणांगणः
कोदातारजकोददातिवसनंप्रातर्गृहीत्वानिशि ॥
कोदक्षःपरवित्तदारहरणेसर्वोऽपिदक्षोजनः
कस्माज्जीवसिहेसखेविषकृमिन्यायेनजीवाम्यहम् ९

टी० । हे विप्र इसनगरमें कौन बड़ाहै ताड़के पेड़ोंका समु-दाय कौन दाताहै धोबी प्रातःकाल वस्त्रलेताहै रात्रिमें देदेताहै चतुर कौनहै दूसरेके धन और स्त्रीके हरणमें सबही कुशलहैं कैसे जीतेहो हे मित्र विषका कीड़ा विषहीमें जीताहै वैसेही मैं भी जीताहूं ९ ॥

नविप्रपादोदककर्दमानिनवेदशास्त्रध्वनिग
र्जितानि ॥ स्वाहास्वधाकारविवर्जितानिश्म
शानतुल्यानिगृहाणितानि १०

टी० । जिन घरों में ब्राह्मणके पावों के जलसे कीचड़ न भया हो और न वेदशास्त्रके शब्दकी गर्जना और जो गृहस्वाहास्वधा से रहितहो उनको श्मशानके समान समझना चाहिये १० ॥

सत्यंमातापिताज्ञानंधर्मोभ्रातादयासखा ॥

शान्तिःपत्नीक्षमापुत्रःषडेतेममबान्धवः ११

टी०। सत्य मेरी माताहै और ज्ञान पिता धर्म मेरा भाईहै और दया मित्र शान्ति मेरी स्त्रीहै और क्षमा पुत्र येही छः मेरे बन्धुहैं ११ किसी संसारी पुरुषने ज्ञानीको देखकर चकित हो पूछा कि संसारमें माता पिता भाई मित्र स्त्री पुत्र ये जितनाही अच्छेसे अच्छेहों उतनाही संसारमें आनन्द होताहै तुझको परम आनन्दमें मगन देखताहूं तो तुझको भी कहीं न कहीं कोई न कोई उनमेंसे होगा ज्ञानी ने समझा कि जिस दशाको देखकर यह चकितहै वह दशा क्या सांसारिक कुटुम्बों से होसक्तीहै इस कारण जिनसे मुझे परम आनन्द होताहै उन्हीं को इससे कहूं कदाचित् यहभी इनको स्वीकार करे ११॥

अनित्यानिशरीराणिविभवोनैवशाश्वतः॥
नित्यंसंनिहितोमृत्युःकर्त्तव्योधर्मसंग्रहः१२

टी०। शरीर अनित्यहै बिभव भी सदा नहीं रहता मृत्युसदा निकटही रहतीहै इसकारण धर्मका संग्रह करना चाहिये १२॥

निमंत्रणोत्सवाविप्रागावोनवतृणोत्सवाः॥
पत्युत्साहवतानार्यःअहंकृष्णरणोत्सवः१३

टी०। निमंत्रण ब्राह्मणों का उत्सवहै नवीन घासगाइयों का उत्सवहै पतिके उत्साहसे स्त्रियों का उत्साह होताहै हे कृष्ण मुझको रणही उत्सव है १३॥

मातृवत्परदारांश्चपरद्रव्याणिलोष्ठवत्॥
आत्मवत्सर्वभूतानियःपश्यतिसपश्यति१४

टी०। दूसरेकी स्त्रीको माताके समान दूसरेके द्रव्यको ढेला के समान अपने समान सब प्राणियों को जो देखता है वही देखता है १४॥

धर्मेतत्परतामुखेमधुरतादानेसमुत्साहता
मित्रेवंचकतागुरौविनयताचित्तेऽतिगम्भीरता ॥
आचारेशुचितागुणेरसिकताशास्त्रेषुविज्ञातृता
रूपेसुन्दरताशिवेभजनतात्वय्यस्तिभोराघव १५

टी०। धर्ममें तत्परता मुखमें मधुरता दानमें उत्साह मित्रके विषयमें निश्छलता गुरूसे नम्रता अन्तःकरणमें गम्भीरता आचारमें पवित्रता गुणमें रसिकता शास्त्रों में विशेषज्ञान रूप में सुन्दरता और शिवकी भक्ति हे राघव ये आपहीमें हैं १५ ॥

काष्ठंकल्पतरुःसुमेरुरचलश्चिन्तामणिःप्रस्तरः
सूर्यस्तीव्रकरःशशीक्षयकरःक्षारोहिवारांनिधिः ॥
कामोनष्टतनुर्बलिर्दितिसुतोनित्यंपशुःकामगोः
नैतांस्तेतुलयामिभोरघुपतेकस्योपमादीयते १६

टी०। कल्पवृक्ष काठहै सुमेरु अचल है चिन्तामणि पत्थर है सूर्यकी किरण अत्यन्त उष्णहै चन्द्रमाकी किरण क्षीण होजाती है समुद्र खाराहै कामके शरीर नही है बलि दैत्य है कामधेनु सदा पशुहीहै इसकारण आपकेसाथ इनकी तुलना नहीं देसक्ते हे रघुपति फिर आपको किसकी उपमा दीजाय १६ ॥

विद्यामित्रंप्रवासेचभार्यामित्रंगृहेषुच ॥
व्याधितस्यौषधंमित्रंधर्मोमित्रंमृतस्यच १७

टी०। प्रवासमें विद्या हित करतीहै घरमें स्त्री मित्र है रोगग्रस्त पुरुषका हित औषध होताहै और धर्म मरेका उपकार करता है १७ ॥

विनयंराजपुत्रेभ्यःपण्डितेभ्यःसुभाषितम् ॥
अनृतंद्यूतकारेभ्यःस्त्रीभ्यःशिक्षेतकैतवम् १८

टी०। सुशीलता राजा के लड़कों से प्रियवचन पण्डितों से

असत्य जुआड़ियोंसे और छल स्त्रियोंसे सीखना चाहिये १८ ॥

अनालोक्यव्ययंकर्त्ताअनाथःकलहप्रियः ॥
आतुरःसर्वक्षेत्रेषुनरःशीघ्रंविनश्यति १९

टी० । बिना विचारे व्यय करनेवाला सहायक के न रहनेपर भी कलह में प्रीति रखनेवाला और सब जाति की स्त्रियों में भोगके लिये व्याकुल होनेवाला पुरुष शीघ्रही नष्ट होजाताहै १९ ॥

नाहारंचिन्तयेत्प्राज्ञोधर्ममेकंहिचिन्तयेत् ॥
आहारोहिमनुष्याणांजन्मनासहजायते २०

टी० । पण्डित को आहार की चिंता नहीं करनी चाहिये एक धर्म को निश्चय के हेतु से सोचना चाहिये इसहेतु कि आहार मनुष्यों को जन्मके साथही उत्पन्न होताहै २० ॥

धनधान्यप्रयोगेषुविद्यासंग्रहणेतथा ॥
आहारेव्यवहारेचत्यक्तलज्जःसुखीभवेत् २१

टी० । धनधान्य के व्यवहार करनेमें वैसेही बिद्याके पढ़ने पढ़ानेमें आहार और राजाकीसभामें किसीके साथ बिबादकर-नेमें जोलज्जाको छोड़रहेगा वह सुखीहोगा २१ ॥

जलबिन्दुनिपातेनक्रमशःपूर्यतेघटः ॥
सहेतुःसर्वविद्यानांधर्मस्यचधनस्यच २२

टी० । क्रमक्रम से जलके एकएक बूंद के गिरने से घड़ाभर जाता है यही सब बिद्या धर्म और धनकाभी कारणहै २२ ॥

वयसःपरिणामेऽपियःखलःखलएवसः ॥
सम्पक्वमपिमाधुर्यंनोपयातीन्द्रवारुणम् २३

टी० । बय के परिणाम परभी जो खल रहताहै सो खलही बना रहता है अत्यन्त पकीभीतितलौकी मीठीनहीं होती २३ ॥

इतिवृद्धचाणक्येद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथत्रयोदशाध्यायप्रारम्भः ॥

मुहूर्त्तमपिजीवेच्चनरःशुक्लेनकर्मणा ॥
नकल्पमपिकष्टेनलोकद्वयविरोधिना १

टी०। उत्तम कर्मसे मनुष्योंको मुहूर्त भरकाजीनाभी श्रेष्ठहै दोनों लोकों के विरोधी दुष्टकर्म से कल्पभर काभी जीना उत्तम नहीं है १ ॥

गतेशोकोनकर्त्तव्योभविष्यंनैवचिन्तयेत् ॥
वर्त्तमानेनकालेनप्रवर्त्तन्तेविचक्षणाः २

टी०। गत वस्तुका शोक नही करना चाहिये और भावी की चिन्ता कुशललोग वर्तमान कालके अनुरोध से प्रवृत्तहोतेहैं २ ॥

स्वभावेनहितुष्यन्तिदेवाःसत्पुरुषाःपिता ॥
ज्ञातयःस्नानपानाभ्यांवाक्यदानेनपण्डिताः ३

टी०। निश्चय है कि देवता सत्पुरुष और पिता ये प्रकृति से सन्तुष्ट होतेहैं पर बन्धु स्नान और पानसे और पण्डितप्रिय वचन से ३ ॥

आयुःकर्मचवित्तञ्चविद्यानिधनमेवच ॥
पंचैतानिचसृज्यन्तेगर्भस्थस्यैवदेहिनः ४

टी०। आयुर्दाय कामधन विद्या और मरण ये पांचजब जीव गर्भ में रहताहै उसी समय सिरजे जाते हैं ४ ॥

अहोवतविचित्राणिचरितानिमहात्मनाम् ॥
लक्ष्मींतृणायमन्यन्तेतद्भारेणनमन्तिच ५

टी०। आश्चर्य है कि महात्माओं के बिचित्र चरित्रहैं लक्ष्मी को तृण समान मानते हैं यदि मिलजाती है तो उसके भार से नम्र होजाते हैं ५ ॥

यस्यस्नेहोभयंतस्यस्नेहोदुःखस्यभाजनम् ॥
स्नेहमूलानिदुःखानितानित्यक्त्वावसेत्सुखम् ६

टी०। जिसको किसीसे प्रीति रहतीहै उसीको भय होताहै स्नेहही दुःखका भाजनहै और सब दुःखका कारण स्नेहही है इसकारण उसे छोड़कर सुखी होना उचितहै ६॥

अनागतविधाताचप्रत्युत्पन्नमतिस्तथा ॥
द्वावेतेसुखमेधेतेयद्भविष्योविनश्यति ७

टी०। आनेवाले दुःखके पहिले से उपाय करनेवाला और जिसकी बुद्धिमें बिपत्ति आजाने पर शीघ्रही उपायभी आजाता है येदोनों सुखसे बढ़तेहैं और जो सोचताहै कि भाग्य बशसे जो होनेवालाहै अवश्य होगा वह बिनष्ट होजाताहै ७॥

राज्ञिधर्मिणिधर्मिष्ठाःपापेपापाःसमेसमाः॥
राजानमनुवर्तन्तेयथाराजातथाप्रजाः ८

टी०। यदि धर्मात्मा राजाहो तो प्रजाभी धर्मिष्ठ होतीहै यदि पापीहो तो पापी समहो तोसम सब प्रजा राजाके अनुसार चलतीहै जैसा राजाहै वैसी प्रजाभी होतीहै ८॥

जीवन्तम्मृतवन्मन्येदेहिनन्धर्मवर्जितम् ॥
मृतोधर्मेणसंयुक्तोदीर्घजीवीनसंशयः ९

टी०। धर्मरहित जीतेको मृतकके समान समझताहूं निश्चयहै कि धर्मयुत मराभी पुरुष चिरंजीवीहीहै ९ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणांयस्यैकोऽपिनविद्यते ॥
अजागलस्तनस्येवतस्यजन्मनिरर्थकम् १०

टी०। धर्म अर्थ काम मोक्ष इनमें से जिसको एकभी नहीं रहता बकरीके गलके स्तनकेसमान उसकाजन्मनिरर्थकहै १०॥

दह्यमानाःसुतीव्रेणनीचाःपरयशोऽग्निना ॥
अशक्तास्तत्पदङ्गन्तुन्ततोनिन्दांप्रकुर्वते ११

टी०। दुर्जन दूसरेकी कीर्तिरूप दुःसह अग्निसे जलकर उस के पदको नहीं पाते इसलिये उसकी निन्दा करने लगतेहैं ११॥

बन्धायविषयासङ्गोमुक्त्यैनिर्विषयम्मनः ॥
मनएवमनुष्याणांकारणंबन्धमोक्षयोः १२

टी०। विषय में आसक्त मन बन्धका हेतुहै विषय से रहित मुक्तिका मनुष्यों के बन्ध और मोक्षका कारण मनहीहै १२ ॥

देहाभिमानेगलितेज्ञानेनपरमात्मनि ॥
यत्रयत्रमनोयातितत्रतत्रसमाधयः १३

टी०। परमात्मा के ज्ञानसे देहके अभिमान के नाश होजाने पर जहां २ मन जाताहै वहां २ समाधिहीहै १३ ॥

ईप्सितंमनसःसर्वंकस्यसंपद्यतेसुखम् ॥
दैवायत्तंयतःसर्वंतस्मात्सन्तोषमाश्रयेत् १४

टी०। मनका अभिलाषित सब सुख जिसको मिलताहै जिस कारण सब दैवके वशहैं इससे सन्तोष पर भरोसा करना उचित है १४॥

यथाधेनुसहस्रेषुवत्सोगच्छतिमातरम् ॥
तथायच्चकृतङ्कर्मकर्त्तारमनुगच्छति १५

टी०। जैसे सहस्रों धेनुके रहते बछरा माताही के निकट जाताहै वैसेही जोकुछ कर्म कियाजाताहै कर्त्ताको मिलताहै १५॥

अनवस्थितकार्यस्यनजनेनवनेसुखम् ॥
जनोदहतिसंसर्गाद्वनंसङ्गविवर्जनात् १६

जिसके कार्यकी स्थिरता नहीं रहती वह न जनमें सुखपाता

हैनबनमेंजनउसकोसंसर्गसेजरातीहैऔरबनमेंसङ्गकेत्यागसे १६॥

यथाखात्वाखनित्रेणभूतलेवारिविन्दति ॥
तथागुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति १७

टी० । जैसे खननेके साधन से खनके नर पाताल के जल को पाताहै वैसेही गुरुगत बिद्याको सेवक शिष्य पाताहै १७॥

कर्मायत्तंफलंपुंसां बुद्धिःकर्मानुसारिणी ॥
तथापिसुधियश्चार्याः सुविचार्यैवकुर्वते १८

टी० । यद्यपि फल पुरुषके कर्मके आधीन रहताहै और बुद्धि भी कर्मके अनुसारही चलतीहै तथापि विवेकी महात्मा लोग बिचारही के काम करते हैं १८॥

सन्तोषस्त्रिषुकर्त्तव्यःस्वदारेभोजनेधने ॥
त्रिषुचैवनकर्त्तव्योऽध्ययनेजपदानयोः १६

टी० । स्त्री भोजन और धन इनतीनसें संतोष करना उचित है पढ़ना जप और दान इनतीनमें संतोष कभी नहीं करना चाहिये १६ ॥

एकाक्षरप्रदातारंयोगुरुंनाभिवन्दते ॥
श्वानयोनिशतंभुक्त्वाचाण्डालेष्वभिजायते २०

टी० । जो एक अक्षरभी देनेवाले गुरूकी बंदना नहीं करता वह कुत्ते की सौयोनिको भोगकर चांडालोंमें जन्मता है २०॥

युगांतेप्रचलन्मेरुःकल्पांतेसप्तसागराः ॥
साधवःप्रतिपन्नार्थान्नचलंतिकदाचन २१

टी० । युगके अंतमें सुमेरु चलायमान होताहै और कल्पके अंतमें सातो सागर परन्तु साधु लोग स्वीकृत अर्थसे कभी नहीं बिचलते २१ ॥

इतिवृद्धचाणक्येत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पृथिव्यांत्रीणिरत्नानिअन्नमापःसुभाषितम् ॥
मूढैःपाषाणखंडेषु रत्नसंख्याविधीयते १

टी०। पृथ्वी में जल अन्न और प्रियवचन ये तीनही रत्नहैं मूढ़ोंने पाषाण के टुकड़ोंमें रत्नकी गिनती की है १॥

आत्मापराधवृक्षस्यफलान्येतानिदेहिनां॥
दारिद्र्यदुःखरोगानिबन्धनव्यसनानिच २

टी०। जीवोंको अपने अपराध रूप वृक्षके दरिद्रता रोग दुःख बंधन और बिपत्ति येफल होतेहैं २॥

पुनर्वित्तम्पुनर्मित्रम्पुनर्भार्यापुनर्मही॥
एतत्सर्वंपुनर्लभ्यन्नशरीरंपुनःपुनः ३

टी०। धन मित्र स्त्री पृथ्वी येसब फिर २ मिलतेहैं परन्तु शरीर फिर२ नहीं मिलता ३॥

बहूनांचैवसत्वानांसमवायोरिपुंजयः॥
वर्षधाराधरोमेघस्तृणैरपिनिवार्यते४

टी०। निश्चयहै कि बहुत जनोंका समुदाय शत्रु को जीत लेताहै तृण समूहभी वृष्टिको धाराके धरनेवाले मेघका निवारण करताहै ४॥

जलेतैलंखलेगुह्यम्पात्रेदानंमनागपि॥
प्राज्ञेशास्त्रंस्वयंयातिविस्तारंवस्तुशक्तितः ५

टी०। जलमें तेल दुर्जनमें गुप्तवार्त्ता सुपात्रमें दान बुद्धिमान में शास्त्र ये थोड़ेभी हों तोभी वस्तु की शक्ति से आपसे आप विस्तारको प्राप्त होजातेहैं ५॥

धर्माख्यानेश्मशानेचरोगिणांयामतिर्भवेत् ॥
सासर्वदैवतिष्ठेच्चेत्कोनमुच्येतबन्धनात् ६

टी० । धर्म विषयक कथाके समय श्मशान पर और रोगियों को जोबुद्धि उत्पन्न होतीहै वह यदि सदा रहती तो कौन बंधन से मुक्त न होता ६ ॥

उत्पन्नपश्चात्तापस्यबुद्धिर्भवतियादृशी ॥
तादृशीयदिपूर्वंस्यात्कस्यनस्यान्महोदयः ७

टी० । निंदित कर्म करने के पश्चात् पछतानेवाले पुरुषको जैसी बुद्धि उत्पन्न होतीहै वैसी यदि पहिले होती तो किसको बड़ी समृद्धि न होती ७ ॥

दानेतपसिशौर्येवाविज्ञानेविनयेनये ॥
विस्मयोनहिकर्त्तव्योवहुरत्नावसुन्धरा ८

टी० । दान में तप में शूरता में बिज्ञता में सुशीलता में और नीतिमें बिस्मय नहीं करना चाहिये इसकारण कि पृथ्वीमें बहुतरत्न हैं ८ ॥

दूरस्थोऽपिनदूरस्थोयोयस्यमनसिस्थितः ॥
योयस्यहृदयेनास्तिसमीपस्थोऽपिदूरतः ९

टी० । जो जिसके हृदय में रहता है वह दूरभी हो तौभी वह दूर नहीं जो जिसकेमनमें नहीं है वह समीप भीहो तौभी वह दूर है ९ ॥

यस्माच्चप्रियमिच्छेत्तुतस्यब्रूयात्सदाप्रियम् ॥
व्याधोमृगवधंगंतुंगीतंगायतिसुस्वरम् १०

टी० । जिससे प्रिय की बांच्छा हो सदा उससे प्रिय बोलना उचितहै व्याधमृगके बधकेनिमित्त मधुरस्वरसे गीतगाता है १० ॥

अत्यासन्ना विनाशाय दूरस्था न फलप्रदाः ॥
सेव्यतां मध्यभागेन राजा वह्निर्गुरुः स्त्रियः ११

टी०। अत्यन्त निकट रहने पर विनाश के हेतु होते हैं दूर रहनेसे फलनहीं देते इस हेतु राजा अग्नि गुरु और स्त्री इन को मध्यावस्थासे सेवना चाहिये ११ ॥

अग्निरापः स्त्रियो मूर्खः सर्पो राजकुलानि च ॥
नित्यं यत्नेन सेव्यानि सद्यः प्राणहराणि षट् १२

टी०। आग जल स्त्री मूर्ख सांप और राजाके कुल ये सदा सावधानतासे सेवनेके योग्यहैं येछःशीघ्र प्राणकेहरनेवालेहैं १२॥

स जीवति गुणा यस्य यस्य धर्मः स जीवति ॥
गुणधर्मविहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम् १३

टी०। वही जीताहै जिसके गुणहैं और वही जीताहै जिसका धर्म्महै गुण और धर्म्म से हीन पुरुषका जीना व्यर्थहै १३ ॥

यदीच्छसि वशीकर्त्तुं जगदेकेन कर्मणा ॥
पुरा पंचदशास्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय १४

टी०। जो एकही कर्म्मसे जगत् को वश कियाचाहते हो तो पहिले पन्द्रहों के मुखसे मनको निवारण करो १४ तात्पर्य्य यहहै कि आंख कान नाक जीभ त्वचा ये पांचो ज्ञानेन्द्रिय हैं। मुख हाथ पांव लिङ्ग गुदा ये पांच कर्म्मेन्द्रिय हैं। रूप शब्द रस गन्ध स्पर्श ये पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय हैं इन पन्द्रहों से मनको निवारण करना उचित है॥

प्रस्तावसदृशं वाक्यं प्रभावसदृशं प्रियम् ॥
आत्मशक्तिसमं कोपं यो जानाति स पण्डितः १५

टी०। प्रसंगके योग्य वाक्य प्रकृतिके सदृश प्रिय और अपनी शक्तिके अनुसार कोपको जोजानता है वह बुद्धिमानहै १५॥

एकएवपदार्थस्तुत्रिधाभवतिवीक्षितः ॥
कुणपंकामिनीमांसंयोगिभिःकामिभिःश्वभिः १६

टी०। एकही देह रूप बस्तु तीन प्रकार की देख पड़ती है योगी लोग उससे अति निन्दित मृतकरूप से कामी पुरुष कांतारूप से कुत्ते मांसरूप से देखते हैं १६ ॥

सुसिद्धमौषधंधर्मंगृहछिद्रंचमैथुनम् ॥
कुभुक्तंकुश्रुतंचैवमतिमान्नप्रकाशयेत् १७

टी०। सिद्ध औषध धर्म अपने घरका दोष मैथुन कुअन्न का भोजन निन्दित बचन इनका प्रकाश करना बुद्धिमानको उचित नहीं है १७ ॥

तावन्मौनेननीयन्तेकोकिलैश्चैववासराः ॥
यावत्सर्वजनानन्ददायिनीवाक्प्रवर्तते १८

टी०। तबलौं कोकिल मौनसाधनसे दिन बिताताहैजबलौ सब जनो को आनन्ददेनेवाली बाणी प्रारम्भ नहीं करती १८।

धर्मंधनंचधान्यंचगुरोर्वचनमौषधम् ॥
सुगृहीतंचकर्त्तव्यमन्यथातुनजीवति १९

टी०। धर्म धन धान्य गुरुका बचन और औषध यदि ये सुगृहीत हों तोइनको भलीभाँतिसे करना चाहिये जो ऐसा नहीं करता वही नहीं जीता १९ ॥

त्यजदुर्जनसंसर्गंभजसाधुसमागमम् ॥
कुरुपुण्यमहोरात्रंस्मरनित्यमनित्यतः २०

टी०। खलका सङ्ग छोड़ साधुकी सङ्गतिका स्वीकार कर दिन रात पुण्य किया कर और ईश्वरका नित्य स्मरण कर इसकारण कि संसार अनित्य है २० ॥

इतिवृद्धचाणक्येचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथपंचदशाध्यायप्रारम्भः ॥ १५ ॥

यस्यचित्तन्द्रवीभूतंकृपयासर्वजंतुषु ॥
तस्यज्ञानेनमोक्षेणकिंजटाभस्मलेपनैः १

टी०। जिसका चित्त सब प्राणियों पर दयासे पिघिल जाताहै उसको ज्ञानसे, मोक्षसे, जटासे, औरविभूतिके लेपन से क्या १ ॥

एकमेवाक्षरंयस्तुगुरुःशिष्यंप्रवोधयेत् ॥
पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यंयद्दत्वाचानृणोभवेत् २

टी०। जोगुरू शिष्यको एकही अक्षरका उपदेश करताहै पृथ्वी में ऐसाद्रव्य नहीं है जिसको देकर शिष्य उससे उत्तीर्णहो २ ॥

खलानांकण्टकानांचद्विविधैवप्रतिक्रिया ॥
उपानहास्यभंगोवादूरतोवाविसर्जनम् ३

टी०। खल और कांटा इनका दोही प्रकारका उपायहै जूता से मुखका तोड़ना वा दूसरे त्याग ३ ॥

कुचैलिनन्दन्तमलोपधारिणंवह्वाशिनन्निष्ठुरभाषिणंच ॥
सूर्योदयेचास्तमितेशयानम्विमुंचतिश्रीर्यदिचक्रपाणिः ४

टी०। मलिन वस्त्रवाले को जो दांतों के मलको दूर नहीं करता उसको बहुत भोजन करनेवाले को कटुभाषी को सूर्यके उदय और अस्तके समय में सोनेवाले को लक्ष्मी छोड़ देतीहै चाहे वह विष्णु भी हो ४ ॥

त्यजंतिमित्राणिधनैर्विहीनंदाराश्चभृत्याश्चसुहृज्जनाश्च
तंचार्थवन्तम्पुनराश्रयन्तेह्यर्थोहिलोकेपुरुषस्यबन्धुः ५

टी०। मित्र स्त्री सेवक बन्धु ये धनहीन पुरुषको छोड़देते हैं वही पुरुष यदि धनी होजाताहै फिर उसीका आश्रय करते हैं धनही लोकमें बन्धुहै ५ ॥

अन्यायोपार्जितंद्रव्यंदशवर्षाणितिष्ठति ॥
प्राप्तएकादशेवर्षेसमूलंचविनश्यति ६

टी० । अनीतिसेअर्जित धन दशवर्ष पर्यन्त ठहरताहै ग्यारहवें बर्षके प्राप्तहोनेपर मूल सहित नष्ट होजाताहै ६ ॥

अयुक्तंस्वामिनोयुक्तंयुक्तंनीचस्यदूषणम् ॥
अमृतंराहवेमृत्युर्विषंशंकरभूषणम् ७

टी० । अयोग्य भी वस्तु समर्थको योग्य होतीहै और योग्य भी दुर्जनको दूषण अमृत ने राहुको मृत्यु दिया विष भी शंकर को भूषण हुआ ७ ॥

तद्भोजनंयद्द्विजभुक्तशेषंतत्सौहृदंयत्क्रियतेपरस्मिन् ॥
साप्राज्ञतायानकरोतिपापंदम्भंविनायःक्रियतेसधर्मः ८

टी० । वही भोजनहै जो ब्राह्मणके भोजनसे बचाहै वही मित्रताहै जो दूसरे में कीजाती है वहीबुद्धिमानीहै जो पापनहीं करती और जो बिना दम्भके कियाजाता है वही धर्महै ८ ॥

मणिर्लुठतिपादाग्रेकाचःशिरसिधार्यते ॥
क्रयविक्रयवेलायांकाचःकाचोमणिर्मणिः ९

टी० । मणि पांवके आगे लोटतीहो कांच शिरपर भी रक्खा हो परन्तु क्रयबिक्रयके समय कांच कांचही रहता है और मणि मणिही ९ ॥

अनंतशास्त्रंबहुलाश्चविद्याअल्पश्चकालोबहुविघ्नताच ॥
यत्सारभूतंतदुपासनीयंहंसोयथाक्षीरमिवाम्बुमध्यात् १०

टी० । शास्त्र अनन्त हैं और विद्या बहुत काल थोड़ा है और बिघ्न बहुत इसकारण जो सारहै उसको लेलेना उचितहै जैसे हंस जलके मध्यसे दूधको ले लेताहै १० ॥

दूरागतंपथिश्रांतंवृथाचगृहमागतम् ॥

अनर्चयित्वायोभुंक्तेसवैचांडालउच्यते ११

टी०। दूरसे आयेको पथसे थके को और निरर्थक गृह पर आयेको बिनापूजे जो खाताहै वह चाण्डालही गिनाजाताहै११॥

पठंतिचतुरोवेदान्धर्मशास्त्राण्यनेकशः॥
आत्मानंनैवजानंतिदर्वीपाकरसंयथा १२

टी०। चारो वेद और अनेक धर्मशास्त्र पढ़तेहैं परन्तु आत्मा को नही जानते जैसे कलछी पाकके रसको १२॥

धन्याद्विजमयीनौकाविपरीताभवार्णवे॥
तरंत्यधोगताःसर्वेउपरिस्थाःपतंत्यधः १३

टी०। यह ब्राह्मणरूप नाव धन्यहै संसाररूप समुद्रमें इसकी उलटीही रीतिहै इसके नीचे रहनेवाले सब तरतेहैं और ऊपर रहनेवाले नीचे गिरतेहैं अर्थात् ब्राह्मणसे जो नम्र रहताहै वह तरजाताहै और जो नम्र नही रहताहै वह नरकमें गिरताहै १३॥

अयममृतनिधानंनायकोऽप्यौषधीनाम्
अमृतमयशरीरःकांतियुक्तोऽपिचंद्रः॥
भवतिविगतरश्मिर्मंडलंप्राप्यभानोः
परसदननिविष्टःकोलघुत्वंनयाति १४

टी०। अमृत का घर औषधियों का अधिपति जिसका शरीर अमृतमय है और शोभायुत भी चन्द्रमा सूर्यके मण्डलमें जाकर निस्तेजहोजाताहै दूसरेकेघरमें पैठकर कौनलघुतानही पाता१४॥

अलिरयंनलिनीदलमध्यगःकमलिनीमकरंदमदालसः॥
विधिवशात्परदेशमुपागतःकुटजपुष्परसंबहुमन्यते १५

टी०। यह भौंरा जब कमलिनीके पत्तों के मध्य था तब कमलिनीके फूलके रससे आलसी बनारहता था अब दैववश से परदेशमें आकर कोरैया के फूलको बहुत समझता है १५॥

पीतःक्रुद्धेनतातश्चरणतलहतोवल्लभोयेनरोषात्
आबाल्याद्विप्रवर्यैःस्ववदनविवरेधार्यतेवैरिणीमे॥
गेहंमेछेदयन्तिप्रतिदिवसमुमाकांतपूजानिमित्तम्
तस्मात्खिन्नासदाहंद्विजकुलनिलयंनाथयुक्तंत्यजामि १६

टी०। जिसने रुष्टहोकर मेरे पिताको पीडाला और जिसने क्रोधके मारे पांवसे मेरे कान्तको मारा जो श्रेष्ठ ब्राह्मण बैठ सदा लड़कपनसे लेकर मुख बिवरमें मेरी वैरिणी को रखतेहैं और प्रति दिन पार्वती के पतिकी पूजाके निमित्त मेरे गृहको काटतेहैं हे नाथ इससे खेद पाकर ब्राह्मणों के घरको सदा छोड़े रहतीहूं १६॥

बंधनानिखलुसंतिवहूनिप्रेमरज्जुकृतबन्धनमन्यत्॥
दारुभेदनिपुणोऽपिषडंघ्रिर्निष्क्रियोभवतिपंकजकोशे १७

टी०। बन्धन तो बहुत हैं परन्तु प्रीति की रस्सी का बन्धन औरही है काठके छेदने में कुशल भी भौंरा कमलके कोशमें निर्व्यापार होजाताहै १७॥

छिन्नोपिचंदनतरुर्नजहातिगंधंवृद्धोऽपिवारणपतिर्नजहातिलीलाम्॥ यंत्रार्पितोमधुरतांनजहातिचेक्षुः
क्षीणोऽपिनत्यजतिशीलगुणान्कुलीनः १८॥

टी०। काटा चन्दनका वृक्ष गन्धको त्याग नही देता बूढ़ा भी गजपति बिलासको नही छोडता कोल्हूमें पेरी भी ऊख मधुरता नही छोड़ती दरिद्र भी कुलीन सुशीलता आदि गुणो का त्याग नही करता १८॥

उर्व्यांकोऽपिमहीधरोलघुतरोदोर्भ्यांधृतोलीलया
तेनत्वंदिविभूतलेचसततंगोवर्द्धनोगीयसे॥
त्वांत्रैलोक्यधरंवहामिकुचयोरग्रेनतद्गण्यते

किम्वाकेशवभाषणेनबहुनापुण्यैर्यशोलभ्यते १६

टी०। पृथ्वीपर किसी अत्यन्त हलके पर्वतोंको अनायाससे बाहुओंके ऊपर धारण किया तिससे आप स्वर्ग और पृथ्वीतल में सर्वदा गोवर्द्धन कहलातेहैं तीनोंलोकोंके धरनेवाले आपको केवल कुचोंके अग्रभागमें धारण करतीहूं यह कुछभी नहीं गिना जाता है केशव बहुत कहनेसे क्या पुण्योंसे यश मिलताहै १६॥

इतिवृद्धचाणक्येषोडशोऽध्यायः ॥१६॥

अथसप्तदशोऽध्यायप्रारम्भः ॥ १७ ॥

नध्यातंपदमीश्वरस्यविधिवत्संसारविच्छित्तये
स्वर्गद्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपिनोपार्जितः॥
नारीपीनपयोधरोरुयुगुलंस्वप्नेऽपिनालिंगितम्
मातुःकेवलमेवयौवनवनच्छेदेकुठारावयम् १

टी०। संसारमें मुक्तहोनेकेलिये विधिसे ईश्वरके पदका ध्यान मुझसे न हुआ स्वर्गद्वारके फाटककेतोड़नेमें समर्थधर्मकाभीअर्जन न किया और स्त्रीके दोनों पीनस्तन और जंघोंका आलिंगन स्वप्न में भी न किया मैं माताके युवापन रूप वृक्षके केवल काटनेमें कुल्हाड़ी हुआ १॥

जल्पंतिसार्द्धमन्येनपश्यंत्यन्यंसविभ्रमाः॥
हृदयेचिंतयंत्यन्यंनस्त्रीणामेकतोरतिः २

टी०। भाषण दूसरेके साथ करती हैं दूसरे को बिलास से देखतीहैं और हृदयमें दूसरेहीकी चिन्ता करतीहैं स्त्रियोंकीप्रीति एकमें नहीं रहती २॥

योमोहान्मन्यतेमूढोरक्तेयंमयिकामिनी॥
सतस्यावशगोभूत्वानृत्येत्क्रीडाशकुंतवत् ३

टी०। जो मूर्ख अविवेकसे समझताहै कि यह कामिनी मेरे

ऊपर प्रेम करतीहै वह उसके बशहोकर खेलके पक्षीके समान नाचा करताहै ३ ॥

कोऽर्थान्प्राप्यनगर्वितोविषयिणःकस्यापदोऽस्तंगताः
स्त्रीभिःकस्यनखण्डितंभुविमनःकोनामराजप्रियः ॥
कःकालस्यनगोचरत्वमगमत्कोऽर्थीगतोगौरवम्
कोवादुर्जनदुर्गुणेषुपतितःक्षेमेणयातःपथि ४

टी०। धन पाकर गर्वी कौन न हुआ किस बिषयीकी बिपत्ति नष्टहुई पृथ्वीमें किसके मनको स्त्रियोंने खण्डित न किया राजा को प्रिय कौनहुआ कालके बश कौन नहीं हुआ किस याचक ने गुरुता पाई दुष्टकी दुष्टतामें पड़कर संसारके पंथमें कुशलता से कौन गया ४ ॥

ननिर्मिताकेननदृष्टपूर्वानश्रूयतेहेममयीकुरंगी ॥
तथापितृष्णारघुनंदनस्यविनाशकालेविपरीतबुद्धिः ५

टी०। सोनेकी मृगी न पहिले किसी ने रचीन देखी और न किसीको सुनपड़तीहै तो भी रघुनंदन की तृष्णा उसपरहुई बिनाशके समय बुद्धि बिपरीत होजातीहै ५ ॥

गुणैरुत्तमतांयातिनोच्चैरासनसंस्थिताः ॥
प्रासादशिखरस्थोऽपिकाकःकिंगरुडायते ६

टी०। प्राणी गुणों से उत्तमता पातेहैं ऊंचेआसन परबैठकर नहीं कोठेके ऊपरके भागमें बैठाकौवा क्या गरुड़होजाताहै ६॥

गुणाःसर्वत्रपूज्यंतेनमहत्योऽपिसंपदः ॥
पूर्णेन्दुःकिंतथावंद्योनिष्कलङ्कोयथाकृशः ७

टी०। सब स्थानमें गुण पूजे जातेहैं बड़ी संपत्ति नहीं पूर्णिमा का पूर्णभी चन्द्रमा क्या वैसा बंदित होताहै जैसा बिना कलंकके द्वितीया का दुर्बलभी ७ ॥

परप्रोक्तगुणोयस्तुनिर्गुणोऽपिगुणीभवेत् ॥
इन्द्रोऽपिलघुतांयातिस्वयंप्रख्यापितैर्गुणैः ८

टी०। जिसके गुणों को दूसरे लोग वर्णन करतेहैं वह निर्गुण भी होतो गुणवान् कहा जाताहै इन्द्रभी यदि अपने गुणों की आप प्रशंसा करे तो उनसे लघुता पाताहै ८ ॥

विवेकिनमनुप्राप्तागुणायांतिमनोज्ञताम् ॥
सुतरांरत्नमाभातिचामीकरनियोजितम् ९

टी०। विवेकी को पाकर गुण सुन्दरता पातेहैं जब रत्न सोना में जड़ा जाताहै तब अत्यंत सुंदर देख पड़ताहै ९ ॥

गुणैःसर्वज्ञतुल्योऽपिसीदत्येकोनिराश्रयः ॥
अनर्घ्यमपिमाणिक्यंहेमाश्रयमपेक्षते १०

टी०। गुणोंसे ईश्वर के सदृश भी निरालंब अकेला पुरुष दुःख पाताहै अमोल भी माणिक्य सोनाके आलंब की अर्थात् उसमें जड़े जानेकी अपेक्षा करताहै १० ॥

अतिक्लेशेनयेअर्थाधर्मस्यातिक्रमेणतु ॥
शत्रूणांप्रणिपातेनयेअर्थामाभवंतुमे ११

टी०। अत्यन्त पीड़ासे धर्मके त्यागसे और वैरियोंकी प्रणति से जो धन होतेहैं सो मुझको नहीं ११ ॥

किंतयाक्रियतेलक्ष्म्यायावधूरिवकेवला ॥
यातुवेश्येवसामान्यापथिकैरपिभुज्यते १२

टी०। उस संपत्ति से लोग क्या करसक्ते हैं जो वधूके समान असाधारणहै जो वेश्याके समान सर्व साधारणहो वह पथिकों के भी भोगमें आसक्तीहै १२ ॥

धनेषुजीवितव्येषुस्त्रीषुचाहारकर्मसु ॥

अतृप्ताःप्राणिनःसर्वेयातायास्यंतियांतिच १३

टी०। धनमें जीवनमें स्त्रियोंमें और भोजनमें अतृप्तहीकर सब प्राणी गये औ जायँगे १३॥

क्षीयन्तेसर्वदानानियज्ञहोमबलिक्रियाः॥
नक्षीयतेपात्रदानमभयंसर्वदेहिनाम् १४

टी०। सब दान यज्ञ होम बलि येसब नष्ट होजातेहैं सत्पात्र को दान और सब जीवो को अभय दान येक्षीण नही होते १४॥

तृणंलघुतृणात्तूलंतूलादपियाचकः॥
वायुनाकिंननीतोऽसौमामयंयाचयिष्यति १५

टी०। तृण सबसे लघुहोताहै तृणसे रुई हलकी होतीहै रुई सेभी याचक इसे बायु क्यों नहीं उड़ालेजाती वह समझतीहै कि यह मुझसेभी मांगेगा १५॥

वरंप्राणपरित्यागोमानभंगेनजीवनात्॥
प्राणत्यागेक्षणंदुःखंमानभंगेदिनेदिने १६

टी०। मानभंग पूर्बक जीनेसे प्राणका त्यागश्रेष्ठहै प्राणत्याग के समय क्षणभर दुःखहोताहै मानके नाशहोनेपर दिनदिन १६॥

प्रियवाक्यप्रदानेनसर्वेतुष्यन्तिजंतवः॥
तस्मात्तदेववक्तव्यंवचनेकिंदरिद्रता १७

टी०। मधुर बचनके बोलने से सब जीव सन्तुष्टहोतेहैं इस कारण उसीका बोलना योग्यहै बचनमें दरिद्रता क्या १७॥

संसारकूटवृक्षस्यद्वेफलेअमृतोपमे॥
सुभाषितंचसुस्वादुसंगतिःसुजनेजने १८

टी०। संसार रूप कूटवृक्षके दोही फलहैं रसीला प्रियबचन और सज्जनके साथ संगत्ति १८॥

जन्मजन्मयदभ्यस्तंदानमध्ययनंतपः ॥
तेनैवाभ्यासयोगेनदेहीचाभ्यस्यतेपुनः १९

टी०। जो जन्म जन्म दान पढ़ना तप इनका अभ्यास किया जाताहै उस अभ्यासके योगसे देही अभ्यास फिर २ करताहै १९॥

पुस्तकेषुचयाविद्यापरहस्तेषुयद्धनम् ॥
उत्पन्नेषुचकार्येषुनसाविद्यानतद्धनम् २०

टी०। जोविद्या पुस्तकोंही पर रहतीहै और दूसरों के हाथों में जो धन रहताहै काम पड़जानेपर न विद्याहै न वहधनहै २०॥

इतिवृद्धचाणक्ये सप्तदशोऽध्यायः॥१७॥

अथाष्टादशाध्यायप्रारम्भः॥ १८ ॥

पुस्तकप्रत्ययाधीतंनाधीतंगुरुसन्निधौ ॥
सभामध्येनशोभन्तेजारगर्भाइवस्त्रियः १

टी०। जिनने केवल पुस्तककी प्रतीतिसे पढ़ा गुरुके निकट न पढ़ा वे सभाके बीच व्यभिचार से गर्भवाली स्त्रियों के समान नहीं शोभते १॥

कृतेप्रतिकृतिंकुर्याद्धिंसनेप्रतिहिंसनम् ॥
तत्रदोषोनपततिदुष्टेदुष्टंसमाचरेत् २

टी०। उपकार करने पर प्रत्युपकार करना चाहिये और मारनेपर मारना इसमें अपराध नहीं होता इसकारण कि दुष्टता करने पर दुष्टताका आचरण करना उचित होताहै २॥

यद्दूरंयद्दुराराध्यंयच्चदूरेव्यवस्थितम् ॥
तत्सर्वंतपसासाध्यंतपोहिदुरतिक्रमम् ३

टी०। जो दूरहै जिसकी आराधना नहीं होसकी और जो

दूरवर्त्त मानहै वे सब तपसे सिद्ध होसक्त हैं इसकारण सबसे प्रबल तपहै ३॥

लोभश्चेदगुणेन किम्पिशुनता यद्यस्ति किम्पातकैः
सत्यंचेत्तपसाच किंशुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्॥
सौजन्यंयदि किंगुणैः सुमहिमा यद्यस्ति किंमंडनैः
सद्विद्यायदि किंधनैरपयशो यद्यस्ति किंमृत्युना ४

टी०। यदि लोभहै तो दूसरे दोषसे क्या यदि लुतुराईहै तो और पापों से क्या यदि सत्यताहै तो तपसे क्या यदि मनस्वच्छ है तो तीर्थसे क्या यदि सज्जनताहै तो दूसरे गुणोंसे क्या यदि महिमाहै तो भूषणों से क्या यदि अच्छी विद्याहै तो धनसे क्या और यदि अपयशहै तो मृत्युसे क्या ४॥

पितारत्नाकरोयस्य लक्ष्मीर्यस्यसहोदरी॥
शंखोभिक्षाटनंकुर्यान्नादत्तमुपतिष्ठते ५

टी०। जिसका पिता रत्नों की खानि समुद्रहै लक्ष्मी जिसकी बहिन ऐसा शंख भीख मांगताहै सचहै बिनादियानहीं मिलता५॥

अशक्तस्तुभवेत्साधुर्ब्रह्मचारीचनिर्द्धनः॥
व्याधिष्ठोदेवभक्तश्चवृद्धानारीपतिव्रता ६

टी०। शक्तिहीन साधु होताहै निर्द्धन ब्रह्मचारी रोगग्रस्त देवताका भक्त होताहै और वृद्धस्त्री पतिव्रता ६॥

नान्नोदकसमंदानंनतिथिर्द्वादशीसमा॥
नगायत्र्याःपरोमंत्रोनमातुर्दैवतंपरम् ७

टी०। अन्न जलके समान कोई दान नहीं है न द्वादशी के समान तिथि गायत्री से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है न मातासे बढ़कर कोई देवता ७॥

तक्षकस्यविषंदन्तेमक्षिकायाविषंशिरे ॥
वृश्चिकस्यविषंपुच्छेसर्वांगेदुर्जनोविषम् ८

टी०। सांपके दांतमें बिष रहता है मक्खीके शिरमें बिष है बिच्छूकी पूंछमें बिष है सब अङ्गों में दुर्ज्जन बिषही से भरा रहता है ८॥

पत्युराज्ञांविनानारीउपोष्यब्रतचारिणी ॥
आयुष्यंहरतेभर्त्तुःसानारीनरकम्ब्रजेत् ६

टी०। पतिकी आज्ञा बिना उपवास बृत करनेवाली स्त्रीस्वामीकी आयुको हरतीहै और वह स्त्री आप नरकमें जातीहै ६॥

नदानैःशुध्यतेनारीनोपवासशतैरपि ॥
नतीर्थसेवयातद्वद्भर्त्तुःपादोदकैर्यथा १०

टी०। न दानोंसे, न सैकड़ों उपवासोंसे, न तीर्थके सेवनसे स्त्री वैसीशुद्धहोती है जैसी स्वामीके चरणोदक से १०॥

पादशेषंपीतशेषंसंध्याशेषंतथैवच ॥
श्वानमूत्रसमंतोयंपीत्वाचांद्रायणंचरेत् ११

टी०। पांवधोनेसे जो जलकाशेष रहजाताहै पीनेसे जो बच जाताहै और सन्ध्याकरने परजो अवशिष्टजल सो कुत्ते के मूत्रके समानहै इसको पीकर चान्द्रायणका बृतकरना चाहिये ११॥

दानेनपाणिर्नतुकंकणेनस्नानेनशुद्धिर्नतुचंदनेन ॥
मानेनतृप्तिर्नतुभोजनेनज्ञानेनमुक्तिर्नतुमंडनेन १२

टी०। दानसे हाथ शोभताहै कङ्कणसे नहीं, स्नानसे शरीर शुद्ध होताहै चन्दन से नहीं, आदरसे तृप्ति होतीहै भोजन से नहीं, ज्ञानसे मुक्ति होतीहै छापा तिलकादि भूषणसे नहीं १२॥

नापितस्यगृहेक्षौरम्पाषाणेगंधलेपनम् ॥

आत्मरूपंजलेपश्यन्शक्रस्यापिश्रियंहरेत् १३

टी०। नाईके घर पर बार बनवानेवाले पत्थर परसे लेकर चन्दन लेपन करनेवाला अपने रूपको पानीमें देखनेवाला इन्द्र भी हो तो उसकी लक्ष्मीको ये हर लेतेहैं १३॥

सद्यःप्रज्ञाहरातुण्डीसद्यःप्रज्ञाकरीवचा॥
सद्यःशक्तिहरानारीसद्यःशक्तिकरंपयः १४

टी०। कुंदुरू शीघ्रही बुद्धि हर लेतीहै और वच झट पट बुद्धि देतीहै स्त्री तुरन्तही शक्ति हर लेतीहै दूध शीघ्रही बल कर देताहै १४॥

परोपकरणंयेषांजागर्त्तिहृदयेसताम्॥
नश्यन्तिविपदस्तेषांसम्पदःस्युःपदेपदे १५

टी०। जिन सज्जनो के हृदयमें परोपकार जागरूकहै उनकी बिपत्ति नष्ट होजातीहै और पद२ में सम्पत्ति होतीहै १५॥

यदिरामायदिरमायदितनयोविनयगुणोपेतः॥
तनयेतनयोत्पत्तिःसुरवरनगरेकिमाधिक्यम् १६

टी०। यदि कान्ताहै यदि लक्ष्मीभी वर्तमानहै यदिपुत्र सुशीलता गुणसे युक्तहै और पुत्रके पुत्रकी उत्पत्ति हुईहो फिर देवलोक में इससे अधिक क्या है १६॥

आहारनिद्राभयमैथुनानिसमानिचैतानिनृणांपशूनां॥ज्ञानन्नराणामधिकोविशेषोज्ञानेनहीनाःपशुभिःसमानाः १७

टी०। भोजन निद्रा भय मैथुन ये मनुष्य और पशुओं के समानही हैं मनुष्योंको केवल ज्ञान अधिक बिशेषहै ज्ञानसे रहित नर पशुके समानहै १७॥

दानार्थिनोमधुकरायदिकर्णतालैः

दूरीकृताःकरिवरेणमदान्धबुद्ध्या ॥
तस्यैवगण्डयुगमण्डनहानिरेषा
भृङ्गाःपुनर्विकचपद्मवनेवसन्ति १८

टी० । यदि मदान्ध गजराज ने गजमद के अर्थी भौंरों को मदान्धतासे कर्णके तालों से दूरकिया तो यह उसीकेदोनोंगण्ड-स्थलकी शोभाकी हानि भई भौंरे फिर विकसित कमल वनमें बसते हैं १८ ॥ तात्पर्य्य यहहै कि यदि किसी निर्गुण मदान्ध राजा वा धनी के निकट कोई गुणी जापड़े उससमय मदान्धों को गुणीका आदर न करना मानों अपनी लक्ष्मी की शोभाकी हानि करनीहै काल निरवधि है और पृथ्वी अनन्तहै गुणीकाआदर कहीं न कहीं किसी समय न किसी समय होहीगा १८ ॥

राजावेश्यायमश्चाग्निस्तस्करोबालयाचकौ ॥
परदुःखन्नजानन्तिअष्टमोग्रामकण्टकः १९

टी० । राजा वेश्या यम अग्नि चोर बालक याचक और आठवां ग्राम कण्टक अर्थात् ग्राम निवासियों को पीड़ा देकर अपना निर्वाह करनेवाला ये दूसरे के दुःख को नहीं जानते १९ ॥

अधःपश्यसिकिम्बालेपतितन्तवकिंभुवि ॥
रेरेमूर्खनजानासिगतन्तारुण्यमौक्तिकम् २०

टी० । हे बाला नीचे को क्यादेखती हो तुम्हारा पृथ्वी पर क्या गिरपड़ा है तब स्त्रीने कहा रेरे मूर्ख नहीं जानता किमेरा तरुणता रूप मोती चलागया २० ॥

व्यालाश्रयापिविफलापिसकंटकापि
वक्रापिपंकिलभवापिदुरासदापि ॥
गन्धेनबन्धुरसिकेतकिसर्वजन्तोः
एकोगुणःखलुनिहन्तिसमस्तदोषान् २१

टी० । हे केतकी यद्यपि तूं सांपो का घर है निष्फल है तुझमें कांटे भी हैं टेढ़ी है कीचड़ से तेरी उत्पत्ति है और तू दुःखसे मिलती भी है तथापि एक गन्ध गुणसे सब प्राणियों को बन्धु होरही है निश्चय है कि एकभी गुण दोषोंका नाश करदेता है २१ ॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्यदर्पणेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इतिभाषाटीकासहितोवृद्धचाणक्यनीतिदर्पणःसमाप्तः ॥

नामकिताब

## वेदान्त

योगवाशिष्ठ
आनन्दामृतवर्षिणी
सांख्यतत्वकौमुदी
दारसभान
ज्ञानकाभूषण

## काव्य

सूरसागर
कृष्णसागर
विश्रामसागर
प्रेमसागर
व्रजविलासबड़ा व छोटा
कृष्णप्रिया
विजयमुक्तावली
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल
कविकुलकल्पतरु
रसराज
सत्सईमूल तथासटीक
सभाविलास
तुलसीशब्दार्थ
भजनावली
प्रेमरत्न
युगुलविलास
चित्रचन्द्रिका
बारहमासा बलदेवप्रसाद
मनोहरलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद
शृङ्गारबत्तीसी
पद्मावत

नामकिताब

## राग

रागप्रकाश
लावनी

## किस्साकहानी

नानार्थनीसंग्रहावली
ब्रह्मसार
शिवसिंहसरोज
भक्तमाल
इन्द्रसभा
विक्रमविलास
बैतालपच्चीसी
पद्मावतीखण्ड
शुकबहत्तरी
बकावलीसुमन
चहारदरवेश
किस्साहातिमताई
अपूर्वकथा
किस्सागुलसनोवर
सहस्ररजनीचरित्र
सिंहासनबत्तीसी
राबिन्सन्क्रूइतिहास
सीताहरण
सतीविलास

## मुतफर्कात

शनिश्चर की कथा
ज्ञानमाला
गोपीचन्दभरतरी
कथाश्रीगंगाजीकी
अवधयात्रा
भरतरीगीत
दानलीला

नामकिताब

नागलीला
रासलीला द्वा० प्र० कृत
दोहावली रत्नावली
गोकर्णमाहात्म्य
श्रीगोपालसहस्रनाम
कथासत्यनारायण
हनुमान बाहुक
जनकपच्चीसी
हरिहरसगुणनि०
वनयात्रा
कायस्थवर्णनिर्णय
विहारवृन्दावन
समरविहारवृन्दावन
कल्पभाष्य

## दर्सी

अक्षरावली
स्वयम्बोध
ज्ञानचालीसी
दोहावली
बालाबोध
विद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
किताबचंची
गणितकामधेनु
लीलावती
पटवारीकीपुस्तकें ४भाग

## ज्योतिषभाषा

जातकचन्द्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
ज्ञानस्वरोदय
रमलसार

नामकिताब

इन्द्रजाल

**संस्कृतकीपुस्तकें**

लघुकौमुदी
सिद्धान्तचंद्रिका
अमरकोषतीनोंकांडस०
पञ्चमहायज्ञ
निर्णयसिंधु
संग्रहशिरोमणि
भगवद्गीतासटीक
दुर्गा[illegible]
दुर्गापाठ [illegible]टीका
विष्णुभागवत
अपराधभंजनस्तोत्र
दुर्गास्तोत्रसटीक
कायस्थकुलभास्कर
कायस्थधर्मनिरूपणबड़ा
तथाछोटा
मधुरासभा
तुलसीतत्त्वभास्कर
रामविवाहोत्सव

**ज्योतिष**

मुहूर्त्तगणपति
मुहूर्त्तचक्रदीपिका
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक
मुहूर्त्तदीपक
बृहज्जातकसटीक
जातकालंकार
जातकाभरण

नामकिताब

लग्नचन्द्रिका

**संस्कृतउर्दू टीका सहित**

मनुस्मृति
विष्णु हारीत
महिम्नस्तोत्र
व्रतार्क
याज्ञवल्क्यस्मृति

**संस्कृतभाषाटीका सहित**

अमरकोष
याज्ञवल्क्यस्मृति
संध्यापद्धति
व्रतार्क
भगवद्गीताटीकाआ०गि०
भगवद्गीताटीकाह०बं०
गीतगोविन्द
कथासत्यनारायण
परमार्थसार
शार्ङ्गधरसंहिता
पाराशरीसटीक
शीघ्रबोधसटीक
लघुजातक
षट्पञ्चाशिका
सामुद्रिक

**नवीनकिताबें**

कालंजरमाहात्म्य
सुधामन्दाकिनी
रामविनयशतक

नामकिताब

नारीबोध
प्रतापविनोद
मनमौजचरित
भविष्योत्तरपुराण
स्कन्दपु०कासेतुबन्धखण्ड
मनोहरकहानी
भ्रमजालकनाटक
सीतावनवास
किस्सामर्द औरत
नवीनसंग्रह
सुदामाचरित
ज्ञानतरंग
सप्तशतिका
विजयचंद्रिका
रामायणवाल्मीकीय
भुवनेशभूषण
महाभारतसबलसिंह चौहानकृत
सुन्दरविलास
गीतरसिका
कवित्तावलीरामायण [illegible]
इलाजुलगुरबा भाषा
रसायनप्रकाश
रामचंद्रिका सटीक
वाराहपुराण
सौदागरलीला
सतसागर
रीडर नम्बर १
रीडर नम्बर २
[illegible]